શ્રી સ્વામિનારાયણ

માસિક

સળંગ અંક - ૫૨ ઓગષ્ટ -૨૦૧૧ કિંમત રૂા. ૫-૦૦

ગુરુ પૂર્ણિમા - ગુરુ પૂજન મહોત્સવ

પ.પૂ. લાલજીમહારાજશ્રીનો ૧૪મો જન્મોત્સવ

પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૧

(૧) ગુરૂ પૂર્ણિમા પ્રસંગે અમદાવાદ મંદિરમાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી સાથે દર્શન આપતા પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી (૨) ગુરૂ પૂર્ણિમા પ્રસંગે પ.પૂ. મહારાજશ્રી અને પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીની નિશ્રામાં પૂ. મહંત સ્વામી ગુરૂ પૂર્ણિમા પ્રસંગે ગુરૂમહિમા કહી રહ્યા છે. (૩) પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીના ૧૪મા પ્રાકટ્યોત્સવ પ્રસંગે પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી, પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી અને બન્ને ભાણાભાઈની નિશ્રામાં પૂજનીય સંતો સમૂહ આરતી ઉતારતા (૪) અમદાવાદ મંદિરમાં ભવ્ય હિંડોળા દર્શન (૫) પ્રાંતિજ મંદિરમાં કલાત્મક (પુરાણો) હિંડોળા દર્શન (૬) લીંબડી (મૂળી દેશ) મંદિરમાં દર્શન આપતા ઘનશ્યામ મહારાજ

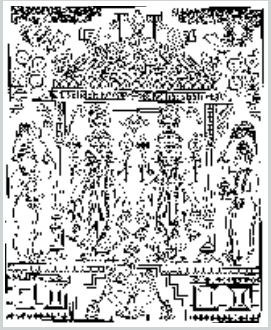

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य

प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ५ अंक : ५२ अगस्त-२०११

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०२

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०३

०३. चौल (मुंडन) विधि ०४

०४. गुरुपूर्णिमा के पावन प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री के आशीर्वचन का आस्वाद ०६

०५. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से ०८

०६. प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में अमेरिका में सर्व प्रथम सत्संग शिबिर १०

०७. सत्संग सुरभि १२

०८.सत्संग बालवाटिका१४

०९. भक्ति सुधा १६

१०. सत्संग समाचार १९

अस्मदीयम

यदि भगवान का द्रोह न करें तो भगवान प्रसन्न होते हैं। द्रोह क्या है ? जगत के कर्ता हर्ता भगवान हैं। जो व्यक्ति भगवान को जगत का कर्ता हर्ता न मानकर काल को मानता है अथवा माया को मानता है या कर्म को मानता है अथवा स्वभाव को मानता है, इसी को भगवान का द्रोह कहा गया है। भगवान कारण के कारण है, आदि अन्त से रहित हैं। काल-माया से परे हैं, ये सभी भगवान की आज्ञा में रहते हैं। ऐसे सत्य ज्ञान तथा अनन्त स्वरुप परमात्मा को जो कर्ता-हर्ता नहीं मानता इसे ही भगवान का द्रोह कहा जायेगा। भगवान कर चरणादिक से परिपूर्ण हैं, कहीं से लेश मात्र भी न्यूय नहीं है। सदा मूर्तिमान रहते हैं। उन्हें अकर्ता कहना या अरुप कहना भी द्रोह है। भगवान के सिवाय कालादिक को कर्ता-हर्ता मानना ही भगवान का द्रोह है। इस प्रकार का द्रोह करके पश्चात् भगवान की पूजा भले पुष्प चन्दनादिक से करता है, तो भी वह द्रोही कहा जायेगा। इसलिये भगवान को जो जगत का कर्ता-हर्ता मानता है तथा मूर्तिमान समझता है, उसके ऊपर भगवान खूब प्रसन्न होते हैं।(व.व. २) इसलिये महाराज को ही कर्ता-हर्ता जानना चाहिये। तभी भगवान अपने ऊपर प्रसन्न होगें। श्री नरनारायणदेव देश के सभी के प्राण प्यारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का गुरुपूर्णिमा के दिन पूजन करके गुरुऋण से मुक्त हुये तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री का १४ वाँ जन्मदिन धूमधाम के साथ सम्पन्न किये। इसी तरह संप्रदाय के सभी उत्सव परंपरा के अनुसार मनाते रहें, यही उत्सव लीला अन्तकाल में स्मरण हो आवे तो जिन्दगी का बेंड़ा पार हो जाय।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०११)

७. श्री स्वामिनारायण मंदिर साणंद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री अरविंदभाई (विमलवाला) के यहाँ पदार्पण, साणंद।
श्री अमितभाई दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल के घर पदार्पण, सोला रोड।

१०. श्री विठ्ठलभाई रणछोडदास पटेल के यहाँ पदार्पण।

१५. गुरु पूर्णिमा के दिन हजारो संत हरिभक्तों ने पूजन अर्चन किया।

१६. श्री धीरुभाई भुराभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, बापूनगर।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर (जि. गांधीनगर) सत्संग सभा प्रसंग में पदार्पण।

१९. श्री शैलेषभाई एन. पुजारा के यहाँ पदार्पण, पालड़ी।

२५. श्री नरनारायणदेव गादी के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री का १४ वाँ प्रागट्योत्सव अपनी उपस्थिति में धूनश्याम के साथ सम्पन्न किये।

२८. जुलाई से ५ सितम्बर अमेरिका तथा यु.के. के धर्म प्रवास में पदार्पण।
अमेरिका डिट्रोईट मंदिर, शिकागो मंदिर पाटोत्सव आटलान्टा नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा वहाँ से लंडन यु.के. लेस्टर मंदिर पाटोत्सव, स्वीडन मंदिर का २० वाँ पाटोत्सव सम्पन्न करके वहाँ से लंडन से अमेरिका बोस्टन का ५ वाँ पाटोत्सव पारायण तथा आई.एस.एस.ओ. के चेप्टरों में सत्संग प्रचारार्थ विचरण।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
छपैया : : www.chhapaiya.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
टोरडा : www.gopallalji.com

चौल (मुंडन) विधि

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपनी भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कार बताये गये हैं जिस में मुंडन (चौल) संस्कार का विधान भी बताया गया है। बालक के जन्म काल से लेकर प्रथम मुंडन को चौल संस्कार कहा गया है। इसके अलांवा प्रसंग के अनुसार किसी तीर्थ में, या पाठ-पूजा के समापन में, मरणोत्तर विधिमें किया जाने वाला मुंडन नित्य-नैमित्तिक केश छेदन, मुंडन या क्षौर कर्म कहा जायेगा। हमारे शास्त्रों में प्रत्येक कार्य यथा समय या यथा विधिकरने के लिये कहा गया है। यथा समय या यथाविधिकी अवगणना अज्ञान के कारण या आलस्य के कारण अथवा श्रद्धाहीनता के कारण की जाती है जिसका विपरीत परिणाम देखने में मिलता है। जिसका पीछा जन्म-जन्मान्तर तक होता रहता है।

शास्त्रों में ऐसा कहा गया है कि सोलह संस्कारो से वंचित बालक जीवन पर्यन्त सद्‌गुणी संस्कार से वंचित रह जाता है। चौल संस्कार होने से जातक पशु-पक्षी इत्यादि योनियों में रहने के बाद जब इस योनि में आता है तो कुसंस्कार उसके मिट जाते हैं। चौल विधिकुल देव अथवा कुल देवी या इष्टदेव के सन्मुख करने की परंपरा है। जन्म से प्रथम तृतीय या पांचवे वर्ष करना चाहिये। उस में भी माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ महीना उत्तम है। पक्ष में शुक्ल पक्ष शुभ है। तिथियों में द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, त्रयोदशी उत्तम है। वारो में सोम, बुध, गुरु, शुक्र शुभ है। शनि, मंगल सर्वदा के लिये वर्जित है।

नक्षत्रो में अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हिस्त, चित्रा, स्वाति, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा उत्तम है। इस में कृतिका अनुराधा, उत्तरा नहीं लेनी चाहिये, रोहिणी, मघा आयुष्य की हानी करती हैं। उसमें भी चौल संस्कार के समय जन्म नक्षत्र, तिथि, मास, वार सदा के लिये निषेधहै। चौल विधिपुत्र की तरह पुत्री का भी किया जाना चाहिये। चौल संस्कार में शिखा रखने का महत्व है। एक माता की सन्तान में एक वर्ष में दो का चौल संस्कार नहीं करना चाहिये।

नित्य नैमित्तिक मुंडन - दाढी कराने के लिये उत्तम समय बताया जा रहा है। नक्षत्रो के विषय में यदि रोहिणी नक्षत्र आठवार, कृतिका में छ बार, वर्ष के भीतर दाढी - मुंडन कराया जाय तो मरण या मरण के समान पीड़ा होती है। अपने जन्म नक्षत्र - तिथि में तथा वार में दाढी मुंडन नहीं करना चाहिये। तिथि में एकादशी चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतिपात, विष्टि, तथा व्रत के दिन श्राद्ध के दिन, मंगलवार, शनिवार, रविवार को क्षौर कर्म नहीं करना चाहिये। वाराही संहिता गर्गादि मुनियों के मतानुसार रविवार को क्षौर कर्म, एक महीने का आयु क्षीण करता है, शनिवार का क्षौर कर्म सात महीने का एवं मंगलवार आठ मास की आयुक्षीण करता है। इसी तरह बुधवार को पांच मास, सोमवार को सात मास, गुरुवार को दश मास, शुक्रवार को इग्यारह मास की आयुष्य वृद्धि होती है। पुत्र वाले सोमवार को क्षौर कर्म न करावें। क्षौर कर्म की तरह नख काटने की विधिनिषेधबताया गया है।

तीर्थ यात्रा के समय मुख्य स्थान पर मुंडन कराना चाहिये। इसी तरह एक आश्रम से दूसरे आश्रम प्रवेश के समय मुंडन कराना चाहिये। जैसे कि यज्ञोपवीत संस्कार के समय, वेदारंभ के समग्र गृहस्थाश्रम प्रवेश के समय, सन्यास ग्रहण के समय मुंडन कराना चाहिये।

मरणोत्तर क्रिया में अवश्य मुंडन कराना चाहिये। सगोत्री रक्त के सम्बन्धवाले को सात पीढी तक का सूतक लगता है। केश रक्त का एक भाग है। इसलिये

मुंडन कराने से मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति के स्थूल संबन्धपूर्ण होजाते है। इसके साथ ही आत्मा का ऊर्ध्वगमन सरलता से हो जाता है । इसका कारण यह है कि केश में सम्बन्धछिपा रहता है । मरणोत्तर में चोटी तथा मूंछ रखकर मुंडन कराना चाहिये। परंतु कुलाचार, ग्रामाचार की परम्परा को ध्यान में रखकर व्यवहार करना चाहिये। मुंडन कराने से मृत व्यक्ति के प्रति शोक-मोह-आघात जल्दी से दूर हो जाता है।

क्षौर कर्म मजा-मस्ति,-शौख के लिये नही होता है - यदि यह कर्म यथाविधिकिया जाय तो मुंडन कर्म के समय विधितथा निषेधका अवश्य ध्यान रखना चाहिये। यदि ऐसा न किया जाय तो आयुष्यहानि निश्चित समझना चाहिये।

केश तथा नख के रक्त का साथ सीधा सम्बन्धहै। इसलिये इसके काटने से विशेष प्रकार की ऊर्जा नष्ट होती है। इसका शरीर के स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता है। इसी कारण ऋषियों ने योग्य समय का निरुपण किया है। ऋषि मुनि साधन के अभाव में दाढी-मूछ नहीं रखते थे बल्कि तन-मन को स्वस्थ रखने के लिये या संयम को रखने के लिये व्रत-नियम का पालन करने के लिये क्षौर ही नहीं कराते थे।

अपने शरीर की रचना जन्म के समय के आधार पर अनुकूल प्रतिकुल नक्षत्र, मास, तिथि, वार इत्यादि को ध्यान में रखकर की गयी है। यह सभी ज्योतिष शास्त्र तथा धर्म शास्त्र के आधार पर सभी के लिये श्रेयस्कर है।

हमारे आगामी उत्सवों की यादी

श्रावण कृष्ण-८ ता. २२-८-२०११ सोमवार को जन्माष्टमी, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मूली मंदिर में उत्सव

भाद्र शुक्ल-११ ता. ८-९-२०११ गुरुवार को जलझीलणी एकादशी, श्री गणपतिजीका उत्सव - अमदावाद, मूली, जेतलपुर, भुज में मनाया जायेगा।

दिवाली वेकेशन शिबिर का आयोजन कार्यक्रम

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में आयोजित तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा दीवाली वेकेशन के शिबिर निम्न लिखित समय तथा स्थान पर सम्पन्न होंगे। जिसका लाभ लेने हेतु नीचे संपर्क करे।

ज्ञान यज्ञ शिबिर

ता. २८-१०-२०११ से ता. १-१०-२०११ (पांच दिन)
वचनामृत (२७३) ग्रंथ पर सुंदर विवेचन तथा विस्तार पूर्ण माहिती।
वक्ता : पू. स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी
स्थान : श्री सहजानंद गुरुकुल, असारवा

बाल शिबिर

ता. २-११-२०११ से ता. ३-११-२०११ (दो दिन)
स्थान : श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर

युवक मंडल शिबिर

ता. ५-११-२०११ से ता. ६-११-२०११ (दो दिन)
स्थान : श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर

बालिका शिबिर

ता. ८-११-२०११ से ता. ९-११-२०११ (दो दिन)
स्थान : श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर
प्रत्येक शिबिर में समस्त धर्मकुल पधारेंगे।

विशेष जानकारी

शिबिरार्थि नियमो की विशेष जानकारी के लिए संपर्क करे

- ज्ञान शिबिर के लिए : पू. स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, श्री सहजानंद गुरुकुल असारवा
- बाल मंडल शिबिर के लिए : स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर
- युवक मंडल शिबिर के लिए : स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमदासजी (छोटे पी.पी. स्वामी), स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर
- बालिका शिबिर के लिए : (१) श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क (२) जस्मिता अमितबाई तथा नवावाडज (३) रुपलबहन - एप्रोच बापुनगर

संपर्क माहिती : श्री नरनारायणदेव युवक मंडल संचालकश्री

गुरुपूर्णिमा के पावन प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री के आशीर्वचन का आस्वाद

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

स्वामिनारायण भगवानने अपने स्थान पर आचार्य पद की प्रतिष्ठा करके भक्तजनों के लिये भक्तिका मार्ग खोल दिया है। इस मार्ग पर चलने वाले को निश्चित रुप से श्रीहरि की प्राप्ति होती है। श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान पर आज तक जितने आचार्य हुये हैं वे सभी आचार्य श्री स्वयं की पहचान नहीं कराये बल्कि श्रीहरि की प्रधानता सर्वत्र प्रतिष्ठित किये। प्रत्येक आचार्य का ध्येय श्री स्वामिनारायण भगवान तथा श्री नरनारायणदेव की भजन-भक्ति में रहा है। इसी में सच्चा सुख निर्देश करते रहे। मुक्तानन्द स्वामी में स्वयं महाराज भी गुरुभाव रखते थे, ऐसे मुक्तानन्द स्वामीने लिखा है कि "रे ब्रह्मा थी कीट लगी जोयुं, जूठुं सुख जाणीने वगोयु, मुक्तानन्द मत तन संग मोह्युं"। मुक्तानंद स्वामीने जगत में सब कुछ देखकर जानकर अनुभव करके ही यह पंक्ति लिखा है। इसलिये महाराज के सिवाय अन्यत्र कहीं भी सच्चा सुख नहीं है। दुनिया के किसी सुख में आकृष्ट होने की जरुरत नहीं है। कोई हार पहनावे, कोई प्रसाद का पैकेट दे इससे आकृष्ट होने की जरुरत नहीं है। अपने लक्ष्य को रखना चाहिये। मान-सन्मान से अहंकार आता है, इसीसे व्यक्ति का पतन होता है। दूसरे को सन्मान देने से दूसरे के गुण को ग्रहण करने से अहंकार खत्म होता है। दत्तात्रेय भगवान २४ गुरु किये थे। प्रत्येक से कुछ न कुछ ज्ञानकी प्राप्ति हुई थी। प्रत्येक विषय पर एक-एक कथा है। दूसरे का अच्छा बोलने के लिये अपने को छोटा बनना पड़ता है। यह बहुत कठिन है। किसी की निंदा करनी हो या किसी का दोष बताना हो तो वह बहुत सरल है। कितने लोग कहते हैं कि फलाना हरिभक्त दंडवत नहीं करता। माला नहीं फेरता। नन्द-संत बहुत सुन्दर सन्देश देते है कि ऐसे हरिभक्त पूर्व में माला फेर लिये है तथा दंडवत कर लिये है, अब उन्हें करने की आवश्यकता नहीं है, हम क्या कर रहे है यह देखना चाहिये, हमारा अभी बाकी है यह समझकर हमें करना है उन्हें नहीं देखना है। वचनामृत में भी महाराज ने यह बात कही है। जो दूसरे में गुण देखता है वह आगे बढता है। जो साधु या हरिभक्त में दुर्गुण ही देखता रहता है वह नीचे गिर जाता है। उनकी प्रगति बाधित हो जाती है। गुणग्राही स्वभाव रखने से सत्संग बढता है और आत्म कल्याण होता है।

हमें भगवान नरनारयणदेव मिले हैं इन्हीं में आत्म समर्पित -आत्मनिष्ठा का भाव रखने से आत्म कल्याण निश्चित है, सभी आवरण अपने आप नष्ट हो जायेंगे। जगत में भगवान स्वामिनारायण के सिवाय कुछ भी नहीं है। इसके पहले भी हमने कहा था कि भगवान नरनारायणदेव का आश्रित साधु हो वह सोने की थाली में भोजन करता होगा तो भी वह त्यागी है। उस साधु को पाच-पचीस हरिभक्त मान-सन्मान देने लगे और वह साधु श्री नरनारायणदेव का आश्रय छोड़कर अन्यत्र अध्यवसाय करने लगे, आत्मश्लाघा द्वारा लोगो को अभिभूत करके अलग अपना अस्तित्व बनाले, गेरुआ कपड़ा पहन ले, कठिन वर्तन भी करने लगे तो भी वह त्यागी नहीं है। वह भोगी ही कहा जायेगा। अलगाववाद, दीवाल, आवरण यह सभी अहंकार के कारण आता है। यह सब रहने वाला है यह तो भगवान स्वामिनारायण के समय से चला आ रहा है और चलता ही रहेगा। लेकिन हमारा यह कर्तव्य है कि हम इसकी परख कर सकें और सत्य समझकर भगवान श्री नरनारायदेव की परम्परा का परित्याग न करे अन्यथा इससे मोक्ष बिगड़ गायेगा।

हम लोगों के लिए महाराजने श्री नरनारायणदेव को दिया है। उन्हीं की सर्वोपरिता तथा दृढ निष्ठा का भाव

रखेंगे तो सुखी होंगे । ऐसे देव, मंदिर, संत हरिभक्त अन्यत्र कहाँ मिलेंगे । इसलिये आज के इस प्रसंग पर महाराज के चरण में हम यह प्रार्थना करते हैं कि आप सभी का कुटुम्ब, परिवार तथा वंश परम्परा भी भगवान श्री नरनारायणदेव में दृढ निष्ठा रखे इससे आप सभी का प्रभु मनोरथ पूर्ण करें ।

यहाँ उल्लेखनीय है कि प.पू. महाराजश्री स्वयं अपनी वात अपने मुख से नहीं कहे, यह महापुरुषों का लक्षण है। परंतु अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायणने धर्मकुल में से ही आचार्यपद पर प्रतिष्ठित करके हम सभी के लिये आचार्य महाराज की परम्परा दी है । इसलिये हे महाराजश्री ? आप भी हम सभी के लिये सर्वोपरि आचार्य है । श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान पर रहकर श्री नरनारायणदेव के स्वरुप में सभी को सुख प्रदान कर रहे हैं । रात्रि-दिन सत्संग की सेवा कर रहे हैं । शास्त्रो के अनुसार श्री नरनारायणदेव तथा स्वामिनारायण भगवान दोनो एक ही है । आप भी उन्हीं के अपर स्वरुप है। श्रीजी महाराजने लिखा भी है -

''अमे एमां ए छे अम मांई रे,
एम समजो सहु बाई भाई रे ।
एथी अमे अलगा न रहिये रे,
एमां रहीने दर्शन दइए रे ॥

(पुरुषोत्तमप्रकाश)

जिन्हे श्रीहरिका आश्रय है तथा जो आपकी आज्ञा में रहता है चाहे वह त्यागी हो या गृही हो वही सच्चा श्री नरनारायणदेव का आश्रित है । वडताल देश के संत हरिभक्तों के लिये वहाँ के पीठाधिपति की आज्ञा में वर्तन करना तथा यहाँ की तरह व्यवहार करना सभी सत्संगियो के लिये श्रेयष्कर है । वह अक्षरधाम का अधिकारी है लिखा भी है -

व.ग.प्र. १ ''धर्मकुल ने आश्रित एवो जे भगवान नो भक्त ..... भगवानना धाम मां जाय छे, तेने योग समाधिवाला ते प्रत्यक्ष देखे छे।

"वन्दन श्री प्रजेन्द्रप्रसादजी को"

(राग : उंडा अंधारेथी प्रभु ! परम तेजे तुं लईजा....)

अमारा छो प्यारां, सकल सत्संगना नयन तारां,
''शतं जीव शरद'' पूर्ण मनोरथ हो अमारा (२)
सदा एवी विनंती, श्री नरनारायण प्रभु ने,
करुं वन्दन प्रेम, श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी ! तमने (२)
सहुना लाडकवाया ! बालप्रभु ! घनश्याम ! छबी छो,
दीसो छो नानां पण, नभ मंडल मां आप रवि छो,
थशो छो नानां पण, नभ मंडलमां आप रवि छो,
थशो मोटां ज्यारे, सहज धरशो धर्मधुरने,
करुं वंदन प्रेमे, श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी ! तमने (२)
श्रीजी आश्रितोनुं श्रेय करवा दिल धरीयुं,
अमानी ाशानां किरण सप जणाओ अमने,
करुं वंदन प्रेमे, श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी ! तमने (२)
श्रीजीनी गादीना आठमां धर्मधिकारी,
सदा विजयी रहेशो, धर्मकुल कीर्ति वधारी,
बनो अनुकूल सहु ते समय संजोग तमने,
करुंवन्दन प्रेमे, श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी ! तमने (२)
कलिकाले बधीयो असुरजननो त्रास जम मां,
तमारे करवुं छे, धर्मरक्षण ते समयमां,
कृपा श्रीहरि करी, जरुर मेबावशो प्रेमीहने,
करुं वन्दन प्रेमे, श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी ! तमने (२)
पितामहनां प्यारां ! संत हरिजननां दुलारा,
तमारुं मुख जोवा, नयन आतुर छे अमारां,
अमि दृष्टि राखो, ''हरिदास'' आपो शरणने,
करुं वन्दन प्रेमे, श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी ! तमने (२)

(हरिदास हसमुखभाई श्रोफ - वडोदरा)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में आने वाले सभी दर्शनार्थियों को शांति का अनुभव तो होता रहता है, परंतु होल नं. ८ में श्रीहरिने जिस श्री नरनारायणदेव की मूर्ति का पूजन अर्चन किया था उस प्रसादी की मूर्ति का आज भक्तजन पूजन-अर्जन करके अर्थसिद्धि कर रहे हैं। इसके अलांवा अब तो सत्संगी लोग पैदल चलकर दर्शन करने आते हैं। सभी का मनोरथ भी पूर्ण हो रहा है। अभी एक दंपती उर्मिलाबहन तथा घनश्यामभाई अपने मनोवांछित संकल्प पूर्ण होते ही सत्संगियो का दर्शन करने आये थे। म्युजियम निर्माण से आज तक इस तरह अनेकों चमत्कारिक कार्य हुये हैं। क्योंकि यह म्युजियम भी स्वयं श्रीहरि का है। इसके निर्माण का संकल्प भी उन्हीं के वंशज का है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम निभाव भेट योजना अंतर्गत दर महिने नियमित रुप से भेट लिखाने वाले दाताश्रीओं की सूचि

प.पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री (बड़े महाराजश्री) की तरफसे

- रु। ११०००/- चि. लालजी महाराज के जन्मदिन के अवसर पर म्युजियम के लिये भेंट।
- रु। ११०००/- चि. श्रीराजा के जन्मदिन प्रसंग पर भेंट।
- रु। ५०००/- चि. सौम्यकुमार (दौहित्र) के म्युजियम में प्रथम दर्शन के अवसर पर भेंट।
- रु। ५०००/- चि. सुव्रतकुमार (दौहित्र) के म्युजियम में प्रथम दर्शन के अवसर पर भेंट।

रु। १०००००/- शारद गांधर्व, अमदावाद
रु। १०००००/- गोल्ड स्टार ज्वेलर्स, अमदावाद प्रति संदिप ब्रजलाल चौक्सी, देवेन दिनेश पाटडिया
रु। ५००००/- घनश्याम कांतिलाल शाह, सेटेलाईट
रु। ३००००/- आरती गोरधनभाई पनारा, हैद्राबाद
रु। १११११/- यशवंतभाई डाह्याभाई अमीन, अमदावाद
रु। १११११/- घनश्यामभाई माणेकलाल ठक्कर, घोडासर
रु। ११०००/- सत्संग परिवार श्री स्वामिनारायण मंदिर सेक्टर-२३ गांधीनगर वती शास्त्री हरिप्रियदास
रु। ११०००/- हसमुखभाई जी. अमीन, अमदावाद
रु। ११०००/- अमित शांतिलाल पटेल, मोरबी
रु। ११०००/- कानजी हीरजीभाई पटेल, नड़ियाद
रु। ५०००/- घनश्याम एन्जीनीयरींग, बोपल
रु। ५०००/- केशरबहन मधुभाई मकवाणा, सामकडा
रु। ५०००/- महेशभाई एस. पटेल, लालोडावाला शिव केमिकल वापी
रु। ५०००/- मंजुलाबहन सुरेशकुमार पटेल, अंबापुर
रु। ५०००/- रविश मधुसूदन भावसार, उमरेठ
रु। ५०००/- वसंतबहन सोनी वती डॉ. झींझुवाडीया, अमदावाद
रु। ५०००/- घनश्याम फेब्रिक्स, अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में जून, २०११ में लिखवाये गए श्री नरनारायणदेव के मूर्ति की अभिषेक की सूचि

ता. ०२ भीखाभाई गोविंदभाई परमार, नवावाडज
ता. ०३ घनश्यामदास कुबेरदास पटेल विहारवाला
ता. ०५ नरनारायण महिला मंडल, राणीप
ता. १० हीराबहन जोईतारामभाई छगनदास, डांगरवा
ता. १० केन्टीन में मूर्तियों का भोग लगाने वाले यजमान रवजीभाई वेलजीभाई पटेल
ता. १२ अ.नि. छगनभाई लालजीभाई मनाणी
ता. १६ पूर्ण अंकितकुमार रवजीभाई पटेल, नारणपुरा
ता. १७ जिज्ञासा विरेन्द्रकुमार देसाई कुंडलवाला
ता. १८ अक्षयभाई पी. पटेल, यु.एस.ए.
ता. १९ रमेशभाई अंबालाल पटेल, विराटनगर
ता. ३१ मितेन रमणलाल परीख, मयुर रमणलाल परीख, सरसपुर

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com ● email:swaminarayanmuseum@gmail.com

अभिप्राय

JayShree Swaminarayan Of all the Museum of the World this is the most importent and does not only contain old items but divine and items that will give Salvation to thos who have darshan of them

- Saints from Bhuj Mandir Kutch

"નિરખી નયણાને તુમી ના મળે રે લોલ....."
Heaven on Earth. Thanks for All Hard Work, all Satsangis are very greatful. This is Wove than one day to enjoy please have good Album to take hanc to remained every day for heavenly place. અસાધારણ, અલૌકિક Grand landwork.
My wife Inquid was with me, she felt at NarnarayanDev Pratistha Room. One Saint was wowing Head; I thought it may be powered some way. I don't know why she felt that feeling? She enjoyed with almost inspiration from God Swaminarayan .
Heartily Congratulation from my Family. Not Inough Words to thanks and express Joyful grateful Feelings. Thanks, we love U H.H. Mota A.M Tejendraprasadji.

-Pankaj Barot (Ohio USA)

This is the first wonder of the world uncomparably and amazing way to reach Akshardham

- Aditi Thakkar - Muscat (Canada)

जयश्री स्वामिनारायण

हम लोग गढडा के आसपास के रहने वाले हैं । श्री स्वामिनारायण म्युजियम का दर्शन करने आये, दर्शन करके धन्य हो गये । एक साथ भगवान श्री स्वामिनारायण की प्रसादी की इतनी सारी वस्तुओं का दर्शन दुनियां में अलभ्य है । इस म्युजियम का आयोजन करके प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी बड़ा उपकार किया है । आपकी कृपा से यहाँ का आयोजन, स्वच्छता शिस्तता सराहनीय है। - नीतिन पी. गज्जर, एडवोकेट

जयश्री स्वामिनारायण

वडतालवासी उपास्य इष्टदेव श्रीहरिकृष्ण महाराज का हम नित्य दर्शन करते हैं । लेकिन होल नं. ८ (मौन हाल) में मनुष्यरुप में विराजमान महाराज का दर्शन करके मानो २०० वर्ष पूर्व की अनुभूति हो गयी । आज की ता. तथा दिन भी हम भूल गये । हमारे शरीर में नख-शिख-केश इत्यादि जब आते हैं तो तुरन्त उसको कटवा डालते हैं, संग्रह नहीं करते किसी को देते नहीं, लेकिन इस प्रकार संग्रहस्थान बनाकर प.पू. बड़े महाराजश्रीने संत-हरिभक्तों पर बड़ा उपकार किया है । ऐसे पू. बड़े महाराजश्री के चरणों में कोटि साष्टांग प्रणाम । जिस तरह दर्शन से दिव्यता का अनुभव हुआ वह अवर्णनीय है, यही भाव सदा बना रहे ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना ।

गोपालानंद स्वामी ४ प्रकार के भक्त बताये हैं - १. स्वयं भजन करे, २. दूसरे को भजन करावे, ३. दूसरे को भजन करने दे, ४. किसी को भजन न करने दे तथा स्वयं न करे । इनमें से दूसरे क्रम का भक्त उत्तम है । पू. बड़े महाराजश्रीने जो श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुओं का संग्रह स्थान किया - इस ऋण को भर नही सकता । क्योंकि इतनी उम्र में रात-दिन, देश-विदेश तक धूम-धूमकर जो प्रसादी की वस्तुओं का संग्रह किया, जो संप्रदाय को दिया वह भूतो न भविष्यति का कार्य है ।

- वडतालवासी सत्संगी महिला वर्ग का जयश्री स्वामिनारायण

"अद्‌भुत"

प.पू. बड़े महाराजश्री के तपस्थली को देखकर धन्यता का अनुभव कर रहे हैं । वारंवार दर्शन की इच्छा होती है । मन में परम शांति की प्राप्ति होती है । मोक्ष की तरफ लेजाने का यह प्रथम उद्यम है । ऐसी पवित्र भूमि पर दर्शन का लाभ मिला - यह प्रभु की असीमकृपा का फल है - जयश्री स्वामिनारायण ।

- विरेन्द्रसिंह बी. झाला (समला)

P.P.S. to Police Comm. A'bad City

जयश्री स्वामिनारायण

आज के दिन हम सभी श्री स्वामिनारायण म्युजियम के दर्शनार्थ आये - जिस में भगवान स्वामिनारायण के जन्म समय से लेकर स्थिति काल पर्यन्त उनकी शरीर से सम्बन्धित जो भी वस्त्राभूषण, शस्त्रास्त्र सत्संग समाज से मिला इसके अलांवा पू. बड़े महाराजश्री के पास जो भी प्रसादी की वस्तु थी वह सब इस पवित्र स्थान पर संग्रहीत किया गया है । भगवान स्वामिनारायण की कृपा से इस म्युजियम का दर्शन करके जीवन की उपयोगीता - सार्थकता सिद्ध हुई है ।

- आभार पटेल कान्तिलाल देवीदास-डांगरवा

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

Vibrant Gujarat
Colours of India

ક્રમાંક:માર્કેટીંગ/પ્રચાર/૨૦૧૧/ 170 [illegible]	તા:૬/૬/૧૧

પ્રતિ,
મુખ્ય કારભારીશ્રી,
મુખ્ય કારભારીશ્રી કચેરી,
શ્રી સ્વામીનારાયણ મંદિર,
કાલુપુર,
અમદાવાદ–૧

<u>વિષય</u> : શ્રી સ્વામીનારાયણ મ્યુઝિયમ, નારણપુરા – અમદાવાદને પ્રવાસન વિભાગમાં જોવાલાયક સ્થળ તરીકે નોંધણી કરવા અંગે.
સંદર્ભ : આપનો તા:૩૦/૪/૧૧નો પત્ર.

મહાશય,

ઉપરોક્ત વિષય અન્વયે આજ્ઞાનુસાર જણાવવાનું કે, અમદાવાદના જોવાલાયક પ્રવાસન સ્થળોના બ્રોશરમાં શ્રી સ્વામીનારાયણ મ્યુઝિયમ, નારણપુરા – અમદાવાદનો સમાવેશ કરવામાં આવશે.

સામાન્ય રીતે ગુજરાત રાજ્યની પ્રવાસન પ્રવૃત્તિની પ્રચાર–પ્રસિધ્ધિ જુદા–જુદા માધ્યમો ધ્વારા દેશ–વિદેશમાં કરવામાં આવે છે જેથી અમદાવાદના જોવાલાયક સ્થળોનું બ્રોશર પણ ગુજરાત પ્રવાસન નિગમ ધ્વારા જ્યારે જ્યારે પ્રચાર–પ્રસિધ્ધિ કરવામાં આવે છે ત્યારે આ બ્રોશરનું વિતરણ કરવામાં આવે છે. આમ અમદાવાદના જોવાલાયક સ્થળોમાં આપના મ્યુઝિયમનો સમાવેશ થયા બાદ દેશ–વિદેશમાં આ પ્રચાર–પ્રસિધ્ધિ થશે જે આપશ્રીને વિદિત થાય.

આપના મ્યુઝિયમના ફોટોગ્રાફની રાઈટ કોપી તથા વિગતો નિગમની એડ એજન્સી સૌભાગ્ય એડવર્ટાઈઝીંગ, અમદાવાદનો મોબાઈલ નં.૯૩૨૮૫૧૯૬૯૫,શ્રી દર્શનને મોકલી આપવા વિનંતી છે.

આભાર સહ,	આપનો વિશ્વાસુ,

મેનેજર (માર્કેટીંગ)

<u>નકલ રવાના:</u>
(૧) સૌભાગ્ય એડ એજન્સી, ૧લો માળ, શંકર ચેમ્બર્સ, એચ.કે.હાઉસ પાસે, અમદાવાદ
–અમદાવાદના જોવાલાયક સ્થળોમાં શ્રી સ્વામીનારાયણ મ્યુઝિયમ, નારણપુરા–અમદાવાદ નો સમાવેશ કરવા વિનંતી છે.

Tourism Corporation of Gujarat Limited
(A Govt. of Gujarat Undertaking)
Block No. 16/17, 4th Floor, Udyog Bhavan, Sector 11, Gandhinagar - 382 016.
GUJARAT TOURISM Phone : +91-79-23222523, 23222645, 23220002 Fax : +91-79-23238908
E-mail :	Website : www.gujarattourism.com

प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में अमेरिका में सर्व प्रथम सत्संग शिबिर

– श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अमेरिका के न्यूयोर्क विस्तार में २६ जून से १ जुलाई तक अपने भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के अध्यक्ष पद पर सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव युवक मंडल का सत्संग शिबिर आयोजित हुआ था । इस शिबिर में दूर-दूर से जिस में केर्फोर्निया, एलबेमा, यु.के. तथा अन्य देशों से कुल २५० से भी अधिक बालक ''जेने जोईये कीर्तन करते हुये २७ धन्टे तक वस की यात्रा करके सत्संग शिबिर में पधारे थे । सुंदर रमणीय सौन्दर्य को विखेरती हुई पहाडी हरियाली से भरा जंगल का दृश्य सौन्दर्य से भरपूर धरती की गोंद में प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में श्री नरनारायणदेव युवक के बाल युवा एकत्रित हुये थे । इस शिबिर का मुख्य सूत्र था **"My Mandir"** अर्थात् मेरा मंदिर ! यह कितना अद्‌भुत ।

यहाँ के महिलाओं को कितना सुख मिला । महिला वर्ग की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा पूज्या श्रीराजा सत्संगियों को ज्ञान देने के लिये पधारी हुई थी । विशेष रुप से विदेश में रहने वाले नई पीढी के लिये अपने मूल संप्रदाय के सिद्धान्तो का अपनी संस्कृति का तथा गादी की परम्परा का सिंचन होता रहे इसलिये इस कैम्प का आयोजन किया गया था ।

कैम्प में सर्वप्रथम स्नानादिक क्रिया करके, ठाकुरजी की पूजा-आरती करके भजन-कीर्तन, शिक्षापत्री अध्ययन नित्य नियम, वचनामृत पठन इत्यादि का कार्यक्रम हुआ था । यहाँ पर सभा के प्रारंभ में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की यथार्थ महिमा जानकर सभी लोग धून में नाच उठते थे ।

कैम्प के समय श्री मनजीभाई हीराणीने सत्संग का सम्पूर्ण देखभाल किया था । इसके साथ शिक्षण का सम्पूर्ण कार्यभार सम्हाला था । कैम्प के तीसरे दिन पू.के. के बुलवीच के युवानों ने हास्य विनोद के साथ आधुनिक माध्यम से मंदिर का महत्व समझाया था । इससे सभी को ख्याल आया कि मंदिर में विराजमान भगवान की सेवा पूजा का क्या महत्व है । बोस्टन के युवानोने मंदिरो में सम्पन्न होने वाले उत्सवों का महत्व समझाया था ।

सिनेमिन्सन (न्युजर्सी) को युवतियो ने बड़े उत्साह के साथ शिक्षण पर प्रकाश डाला था । सर्वोपरि श्रीजी महाराज के समय से आज तक सभी संतोने जो त्याग किया है उसीसे सम्प्रदाय की पुष्टि हुई है, इस विषय पर प.पू. लालजी महाराजने प्रकाशडाला था । लालजी महाराजश्री के साथ शा. रामकृष्णदासजी, धर्मकिशोर

पेईज नं. १३

सत्संग सुरभि

"सत्संग में दीव्यता"

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (मेमनगर-अहमदाबाद)

सर्वावतारी भगवान स्वामनारायण द्वारा प्रवर्तित इस मूल संप्रदाय के सत्संग की दीव्यता अलौकिक है।

परमेश्वर का अवतार तथा परमेश्वर के संत जगत के कल्याण के लिये होते हैं। परंतु खराब बुद्धि हो तो खराब ही विचार आयेगा । (ग.प्र.प्र. ३१) भगवान का या भगवान के भक्त का अवगुण लेने को श्रीजी महाराजने खराब बुद्धिवाला कहा है।

सत्संग दर्पण तुल्य है। जिस भाव के साथ सत्संग में जाते हैं वही प्रतिबिम्ब दिखाई देता है । दिव्य भाव से सत्संग करें तो सत्संग के समान दूसरा कुछ भी नहीं होगा।

वर्तमान आचार्यश्री प.पू. कौशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री सदा हंसते ही रहते हैं। यह इनकी स्वाभाविक प्रकृति है। एक बार कोई उनसे पूछा कि आप इतना हर दम क्यों हंसते रहते हैं । इसका क्या कारण है । महाराजश्रीने बड़ा सुन्दर उत्तर दिया, क्यों न हंसते रहे ? हमारे बाप कौन हैं ? अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति हैं। तो चिन्ता किसकी।

जगत में किसी का बाप नेता हो या पुलिस अधिकारी हो तो उनकी सन्तान भी अधिकारी बनकर घूमती रहती है। जब कि हम तो सर्वावतारी श्रीहरि के अपर स्वरुप है । तो न्यूनता किस वात की । एकबार मुक्तानदं स्वामी ने महाराज से प्रश्न पूछा कि "हे महाराज कितने लोग प्रतिदिन सत्संग में बढते है और कितने लोग सत्संग में दिन प्रतिदिन घटते रहते हैं। इसका क्या कारण है?

बाद में श्रीहरिने उत्तर दिया कि "मोटा ने साधु तेनो जे अवगुण ले छे ते घटतो जाय छे, अने ते साधुजनोजे गुण ले छे तेनुं अंग वृद्धि ने पामतुं जाय छे अने तेने भगवानने विषे भक्ति पण वृद्धि पामे छे । माटे एवा साधुनो अवगुण न लेवो ने गुणज लेवो । अने अवगुण त्यारे ज लेवो, ज्यारे परमेश्वरनी बांधेल जे पंचवर्तमाननी मर्यादा तेमांथी कोईक वर्तमाननो ते साधु भंग करे, त्यारे तेनो अवगुण लेवो । पण कोई वर्तमान मां तो फेर न होय, ने तेनी स्वाभाविक प्रकृति ठीक न जणाती होय, तेने जोईने ते साधु मां बीजा घणा गुण होय तेनो त्याग करीने, जो एकता अवगुण ने ज ग्रहण करे तो, तेना ज्ञान वैराग्य आदिक ने शुभ गुण ते घटी जाय छे माटे वर्तमान मां फेर होय तो ज अवगुण लेवो पण अमथो भगवान ना भक्तनो अवगुण लेवो नहीं अने जो अवगुण ले नहिं तो तेने शुभ गुणनी दिवस दिवस प्रत्ये वृद्धि थती जाय छे।(ग.प्र.प्र. ५३)

सत्संग में दिव्यता का अनुभव क्यों नही होता इसका उत्तर कितना सचोट महाराज ने वचनामृत में दिया है। कविवर श्री दलपतराम ने अपनी कविता में सुन्दर निरुपण किया है -

एकदिन जंगल में पशुपक्षी तथा अन्य प्रणियों की सभा एकत्रित हुई। सभी की चोंच टेढी है। कुते की पूंछ टेढी है। शुक की चोंच टेढी है। इस तरह सभी एक दूसरे की वक्रता का निरुपण किये। यह सुनकर सियार ने कहा कि ऊंटभाई ? अन्य का तो कोई एक ही टेढा है लेकिन आप का तो अठ्ठारह अंग टेढा है। मनुष्य का एक स्वभाव होता है कि वह अपने दोष को नहीं देखपाता है। अन्य के दोष उसे दिखाई देते हैं।

इसी तरह सत्संग में आकर सभी एक दूसरे के दोष को ही देखते हैं। इसी विचार से लिखना है कि सभी में गुण देखना है एकाधअवगुण हो तो उसे भुलाना है। क्या श्रवण करना है ? क्या मनन करना है ? क्या विचार करना है ? (निदिध्यास) यही तो सत्संग में से सीखना है। अपने विचारों का तथा सत्संग की दीव्यता का सीधा

संबन्धहै । जैसा अन्न वैसी उडकार, उसी तरह जैसा विचार वैसे व्यवहार । सत्संग में अहोभाव रखकर अच्छा विचार प्राप्त करेंगे तो व्यवहार भी निराला बनेगा तथा अहर्निश आनंद का अनुभव होगा । परंतु सड़े हुये आम्रफल की भूमिका रखेंगे तो सत्संग रुपी छबी में सड़न पैदा होगी ।

सत्संग तो दूधकी तरह स्वच्छ एवं निर्मल है । उसमें शक्कर की तरह हमें मिलजाना है । तभी सत्संग में दिव्यता का अनुभव होगा और चारो तरफ मिठाश फैल जायेगी। परंतु सत्संगी मात्र के अवगुण रुपी जहर का एक बूंद भी इस सत्संग रुपी शक्कर वाले दूधको जहर बना सकता है ।

परमात्मा श्रीहरिने खूब सूक्ष्म चिन्तन के बाद सत्संग की रुपरेखा तैयार कीथी । शिक्षापत्री - वचनामृत में निरुपित आज्ञा-आदेश या ज्ञान की वात को स्वीकारने के लिये कहा स्वतंत्र मनमाने ढंग से वर्तन के लिये स्पष्ट मना किये है । आबाल वृद्ध नरनारी, गृहस्थ-त्यागी सभी के विशेष तथा सामान्य धर्म का बड़ी सरलता से निरुपण किया है । उस प्रणालिका को ध्यान में रहकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज की आज्ञा में सभी को रहना है । अपने सत्संग रुपी पुष्प की शोभा का समन्वय सर्वत्र दृष्ट होता है । श्रीहरि की लावण्यमयी मूर्ति शोभा है तो सत्संग उसकी सुगन्धहै । धर्मवंशी आचार्य के प्रति आदर सन्मान तथा उन्ही की आज्ञा में व्यवहार करेंगे तो श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त होगी । अन्यत्र कहीं भी शिथिलता चलेगी परन्तु सत्संग की प्रणालिका में शिथिलता ठीक नहीं । सत्संग समाज आपास में दोष भाव का त्याग करके एक दूसरे में गुणग्राहिता का भाव रखेगा तो सम्पूर्ण सत्संग समाज सुखी होगा ।

''अन्य नुं तो वांकु पण आपना अढार छे'' । कवि श्री दलपतराम के इस वाक्य का अनुकरण करके सत्संग में रहेंगे तो सदा के लिये दिव्यता बनी रहेगी । सत्संग जैसी दिव्यता अन्यत्र कही भी नहीं है । स्वर्ग में भी नहीं यही सच्ची सत्संग सुरभि है ।

अनु. पेईज नं. ११ से आगे **प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में अमेरिका में सर्व प्रथम सत्संग शिबिर**

स्वामी (एल.ए.), ज्ञानप्रकाश स्वामी कोलोनिया से पधारे थे । जिन्हों ने गुजराती तथा अंग्रेजीमें साम्प्रदायिक परम्परा के रहस्य को समझाया था ।

परंतु इस कैम्प में आये हुए सभी को आतुरताथी प.पू. लालजी महाराज के आशीर्वचन सुनने की यद्यपि १४ वर्ष के होते हुये भी जो व्यक्तित्व-प्रभाव सभी पर डाला वह अविस्मरणीय है - लालजी महाराजश्रीने पूजा पद्धति, हरिकी सर्वोपरिता, मंदिर के प्रति भावना, निष्काम भक्ति इत्यादि विषयों पर अलौकिक ज्ञान दिया था । सभा के समय सभी के नाना विधप्रश्नो का उत्तर भी किया गया था ।

दोपहर के समय लालजी महाराजने संतो-हरिभक्तों के साथ क्रिकेट तथा वोलीबोल खेलकर सभी को आनन्दित किया था । इसी तरह प.पू. गादीवालाश्रीने भी युवतियों को उनकी समस्याओं पर मार्गदर्शन दी थी ।

कैम्प के आयोजनों की व्यवस्था सराहनीय थी । आगुन्तको को नाना प्रकार के व्यंज्जनो का प्रसाद भोजन में दिया गया था । इस तरह सतत छ दिन तक बाल युवानों का सत्संग धर्मकुल तथा संत समागम का दिव्य लाभ मिलाा था । इस कैम्प में कितने लोग एक दूसरे को पहचानते नहीं थे फिर भी छ दिन तक साथ रहने से एक दूसरे आपस में परिचित हुये । इस तरह आपस में सभी सत्संग के लिये पूरक हुये ।

प.पू. लालजी महाराजश्री तथा संतो का आशीर्वाद भावि पीढी के लिये नई दिशा, नई प्रेरणा को देनावाला था । सभी आपस में इतने सन्निकट हो गये थे कि अलग होने का विचार ही नहीं हो रहा था । सभी के मन में विचार आने लगा कि पुनः ऐसा कैम्प कब होगा ?

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

विशेष नियम की विशेष वात

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

चातक जिस तरह चन्द्र की प्रतीक्षा करता है । मोर जिस तरह मेघ की प्रतीक्षा करता है, कुंज पक्षी का बच्चा जिस तरह अपनी माता की प्रतीक्षा करता है, ठीक इसी तरह हम सभी बरसात की प्रतीक्षा कर रहे है । वर्षाऋतु में बरसात आने के साथ ही वातावरण में कितनी आहलादकता बढ जाती है । चारो तरफ हरियाली हरियाली हो जाती है । भीनी भीनी मिट्टी की सुगन्धचारो तरफ पैल जाती है । बालक युवा, वृद्ध सभी बरसात आने के साथ खुश हो जाते है । आह, कितनी मजा !

आवरे बरसात, घेबरियो प्रसाद ।
उनी उनी रोटली ने कारेलानुं शाक ॥

लेकिन कभी कभी मजा से सजा हो जाती है । दूसरे की क्या बात एक बार अपने घनश्याम महाराज के बड़े भाई रामप्रतापभाई को भी वर्षाऋतु में सजा हुई थी । यह एक आश्चर्य की बात है । ध्यान लगाकर सुने ।

जब घनश्याम महाराज छपैया में थे आषाठ शुक्ल-११ से चातुर्मास आरंभ हो रहा था, उसी दिन घनश्याम महाराज ने सभी से कहा कि आज से सभी लोग एक विशेष प्रकारका नियम लें और उस नियम का चार मास तक पालन करना होगा । घनश्याम महाराज की आज्ञा सभी ने शिरो धार्य किया उस विशेष नियम में यह हुआ कि जब तक सूर्य भगवान का दर्शन नहीं हो, तब तक कोई भोजन नहीं करेगा । सभी को यह पता है कि चातुर्मास बरसात में ही आता है । अब हुआ ऐसा कि इतना अधिक बरसात हुआ कि सूर्य का दर्शन दुर्लभ हो गया ।

रामप्रतापभाई का यह नियम था कि सूर्यनारायण भगवान का जब तक दर्शन नहीं हो तब तक अन्नग्रहण नहीं करना । इस बरसात के कारण सूर्य का दर्शन नहीं हो पाया । स्थिति यह हुई कि एक नही, दो नहीं बल्कि लगातार १२ दिन का उपवास हो गया । लेकिन वे हिम्मत नहीं हारे । हिम्मत हार जांय तो सच्चा भक्त कैसा ? वे इतने शूरवीर, निष्ठावान थे कि भगवान भी उनकी सहायता करते थे । क्योकि ऐसे भक्त भगवान को बहुत प्रिय होते हैं ।

इस तरह १२ दिन के उपवास को देखकर बड़े भाई से घनश्याम महाराज ने पूछा कि बड़े भाई आप इतना कठिन व्रत क्यों लेलिये । बड़े भाईने कहा कि हमें दूसरी कोई इच्छा नहीं, लेकिन भगवान सूर्य के प्रत्यक्ष दर्शन की इच्छा अवश्य है । यह सुनते घनश्याम महाराज की इच्छा से भगवान सूर्यनारायण उन्हीं के आंगन में आकार खड़े हो गये । सूर्यनारायण का इतना अधिक तेज (प्रकाश) था की बड़े भाई की आंखे बन्द हो गयी । सूर्यनारायण की बड़े भाईने पूजा के बाद में सूर्यनारायण ने घनश्याम महाराज की पूजा की और बड़े भाई से कहा कि आपके छोटे भाई की हम तथा देवतादिक उपासना करते है ।

बाद में सुवासिनी भाभीने गोमती गाय का दूधलाकर सूर्यनारायण को दिया । सूर्यनारायण प्रसन्न होकर दुग्धपान किये । भगवान की आज्ञा लेकर सूर्यनारायण अदृश्य हो गये । आकाश में मध्याह्न के समय जैसा सूर्यप्रकाश दिखाई दिया । बाद में माताजी ने रसोई बनाकर बड़े भाई को भोजन करवाया । इसके बाद उसदिन के उपवास की पूर्णाहुति हुई ।

मित्रो ! आप लोगों ने देखा न बड़े भाई की दृढ प्रतिज्ञा । १२ उपवास के बाद भी नियम में कोई परिवर्तन नहीं किया । आप को भी घनश्याम महाराज की प्रसन्नता प्राप्त करनी हो तो शिक्षापत्री श्लोक ७६, ७७, ७८ में जो नियम बताया गया है उसमें से जो भी कोई नियम रखकर पालन करेगा तो उसे बड़े भाई की तरह किसी

प्रकार का विध्न नहीं आयेगा और घनश्याम महाराज प्रसन्न होंगे।

●

धैर्यवान बनो

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

सभी सद्‌गुणों में धैर्य सर्वश्रेष्ठ है। चाहे जैसी भी कठिन परिस्थिति हो उसमें जो धैर्य को न खोये उसे धैर्यवान कहा जाता है। अनेको आपत्तियों से घिरा होने पर भी अपने धैर्य को न खोये उसे अति धैर्यवान कहा जाता है। इसलीये तो शतानन्द स्वामीने महाराज का एकनाम ''अतिधैर्यवते नमः'' लिखा है।

श्रीहरि के साथ अमदावाद में पेश्वा ने ऐसा भयंकर दगा दिया कि धैर्यवालों का धैर्य टूट जाय। पेश्वा ने महाराज से करबद्ध प्रार्थना की कि आप मेरे यहाँ पधारे। दगाखोर मनुष्य पहले झुकता है और बाद में वार करता है। स्वामिनारायण भगवान को भद्र कोर्ट में पधारने का आमंत्रण दिया, महाराज वहाँ पधारे। भीतर अकेले पधारने की बात की। भीतर कचहरी है अतः भक्तों की संख्या भीतर अच्छी नहीं रहेगी। संतो की तथा भक्तों की इच्छा नहीं थी। फिर भी महाराज की आज्ञा से सभी बाहर रुक गये। देवानंद स्वामी हठाग्रह करके भीतर साथ में गये। भीतर एक बडी टंकी के ऊपर गद्दा तकिया रखी गयी थी, उसी पर बैठने की व्यवस्था थी। उसी पर बैठने का निवेदन किया। सर्वान्तर्यामी ने कहा सूबाजी ? यह आसन आपलोगों के लिये है ऐसा राज्यासन तो आपलोगों को अच्छा लगेगा। श्रीहरि के कहने का तात्पर्य यह था कि यहि अच्छे रास्ते पर नहीं चलो, नीति तथा सत्य का पालन नहीं करो, भगवान की भक्ति नहीं करो, तो इसी तरह विशाल टंकी में गिरना पड़ेगा। जो आप जैसे लोगों के लिये उचित है। यह सुनकर सूबाने कहा कि, थोडा़ समय बैठकर इसे पवित्र कर दीजिये, ठीक है आप का भाव है तो मैं हाथ रखकर पवित्र कर देता हूं। ऐसा कहकर प्रभुने अपने हाथ की सोटी से गद्दी को दबाया तो गद्दी-तकिया सभी उसी टंकी में गिर गया। पेश्वा की कपट बाहर आ गयी। लेकिन प्रभु ने अति धैर्यवान की विचार शरणी को खोया नहीं। विचार करने लायक यह बात है। यदि कोई सामान्य व्यक्ति होता तो क्या होता ? महाराज के मुख पर क्रोधकी एक रेखा भी नहीं दिखाई दी। इसीलिये प्रभु का एकनाम ''अति धैर्यवते नमः'' सार्थक है। लेकिन महाराज के साथ एक संत देवानन्द भी गये थे। यह कृत्य देखकर उनके गुस्से का कोई पार नहीं। अपने हाथ की छड़ी पटकने लगे। महाराज उनके हाथ पकड़े रहे और शांत करते रहे। महाराज हंसते हुये पेश्वा से कहे कि कुछ तो भगवान से डरो। इतना कहकर वहाँ से चल दिये। उधर पेश्वा अपने सेवक महाराज के पीछे पीछे भेजा और पत्र देने को कहा पत्र में लिखा कि अहमदाबाद शहर छोड़कर चले जाओ पुनः आना नही। संदेशवाहक से महाराजने कहा कि पेश्वा से यह पूछना कि हम कब तक यहाँ न आवें। पेश्वा ने संदेश दिया कि जब तक मेरा राज्य है तब तक। यह सुनकर हरिभक्त उदास हो गये। महाराजने सभी से शान्ति रखने की बात की।

संत संतापे जात है, राज कुल औ वंश।
तुलसी तीनुं ना रह्या, रावण, कौरव, कंश॥

इसका राज्य कब तक रहेगा ? थोड़े समय में ही सूबा का राज्य खत्म हो गया। हमारे कहने का मतलब यह है कि विपरीत परिस्थिति में भी धैर्य जो रखे उसे धैर्यवान कहा जायेगा।

जीवन में भगवान की तरह धैर्यवान तो नहीं हो सकते फिर भी उनके बताये मार्ग का अनुकरण तो अवश्य करना चाहिये। इससे जीवन में शान्ति मिलेगी और भगवान उसकी सहायता भी करेंगे। इसलिये सुखी होने के लिये धैर्यवान बनना आवश्यक है।

(श्री जनमंगल कथा भाष्य के आधार पर)

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से
"सत्संग मे सच्ची चाहना होती है वह सतर्क रहता है"

- संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोड़ासर)

परमात्मा की कृपा से ही मनुष्य शरीर मिलता है। इसलिये मनुष्य को मनुष्य शरीर प्राप्ति का रहस्य अवश्य समझना चाहिये । परमात्मा की प्राप्ति ही मुख्य हेतु है । वर्तमान में आपका उद्‌भव स्थान क्या है ? आपका घर है। आप जब भी कोई यात्रा करने जाते हैं और वहाँ से जब वापस घर आते हैं तभी शांति का अनुभव होता है। इसी तरह मनुष्य के उत्पत्ति का स्थान क्या है ? तो परमात्मा है। जब मनुष्य परमात्मा को प्राप्त करलेता है तो परम शांति को प्राप्त कर लेता है जिस तरह धूप से पानी भाप बनकर बादल बनता है और बादल से बरसात होकर समुद्र में मिल जाता है। इसी तरह उस जल की यात्रा पूर्ण हो जाती है। उसे पूर्णत्व की अनुभूति या परम शांति का अनुभव होता है।

परमात्मा की प्राप्ति के लिये क्या चाहिये ? तो परमात्मा की प्राप्ति के लिये अनन्य भक्ति चाहिये। वह भक्ति जिस तरह चातक पक्षी स्वाति नक्षत्र के एक बूंद के सिवाय अन्य की अपेक्षा नहीं रखता ठीक इसी तरह भक्ति आत्मनिष्ठा पूर्वक करनी चाहिये। लेकिन मनुष्य लोभ-लालच में फंस जाता है और भक्ति के मार्ग से विमुख हो जाता है। फिर भी भगवान का जो सच्चा भक्त होता है वह परमात्मा को प्राप्त करलेता है। इस पर एक दृष्टांत है -

एक व्यापारी अपने काफिले के साथ चलकर जा रहा था। रात्रि में एक जगह उसे रुकना पड़ा। उस व्यापारी के साथ १०० ऊँट थे। सभी को अलग-अलग खूंटा गाड़कर बांधा है, लेकिन एक खूंटा तथा डोरी घट जाती है, जिसके यहाँ निवास करने के लिये रुका था, उससे १ एक खूंटा तथा डोरी मांगता है। लेकिन मालिक के पास खूंटा तथा डोरी नहीं थी, इसलिये वह कहता है कि मेरे पास तो नहीं है लेकिन उपाय बताता हूं वैसा आप करो ! जिस तरह सभी ऊँट को डोरी से खूंटे में बांधे उसी तरह का नाटक उस ऊट के पास भी करो, ऐसा करने से वह अपने को बंधा हुआ मान लेगा। हुआ भी ऐसा, वह व्यापारी वैसा ही किया और वह ऊट स्वयं को बंधा हुआ मानकर अन्य ऊंटो की तरह शांति से सो गया। प्रात: होते ही सभी ऊंटो को छोड़ता है और सभी उठ खड़े होते हैं। लेकिन जिसे बांधा नही गया था वह खड़ा नहीं हुआ तो व्यापारी - मालीक के पास गया, उस स्थिति को बताया। उस मालिक ने कहा कि जिस तरह का नाटक रात्रि में अन्य ऊंटो के साथ किये, और वह सो गया, ठीक उसी तरह अभी जब सभी को जिस तरह छोड़े है उसी तरह नाटक करेंगे तो वह खड़ा हो जायेगा। व्यापारी वैसा करता है तो वह खड़ा हो जाता है और चलने लगता है। इसी तरह यह जीव भी भ्रम से बंधगया है और भ्रम से अपने को छूटा हुआ मानलेता है। जो शास्वत है उसे नाशवंत और जो नाशवंत है उसे शास्वत मानने लगता है । अर्थात् विषयों का आकर्षण जीव को उसके शिवत्व को भुला देता है इसलिये जीव सदा विषयों की तरफ आकृष्ट होकर भागता रहता है। उसी को सच्चा सुख मान लेता है। भ्रांति का सुख, अर्थात् मैं जो कर रहा हूँ वही सही है ऐसा मान बैठता है। लेकिन यह भ्रांति का सुख है। ऊंट तो पशु है, अज्ञानी है, विवेक नहीं है। यद्यपि मनुष्य तो ज्ञानी है, विवेकी है, मनुष्य को परमात्मा ने परमात्मा को पहचानने की शक्ति दी है, पशु में यही गुण नहीं है। जिस रोगी को रोग का ख्याल न आवे और दवा न करावे तो रोग दूर नहीं होता, ठीक ऐसा ही व्यक्ति के जीवन में है जब तक अज्ञान दूरनहीं होगा तब तक अन्त: करण शुद्ध नहीं होगा। भक्त इस रहस्य को समझकर संसार से अलिप्त रहता है और संसार सागर पार करलेता है। अन्त में आप सब इस प्रबोधिनी एकादशी को जागरण सत्संग सभा में आयी है और रात्रि जागरण की है, इससे भगवान श्री नरनारायणदेव आप सभी को शक्ति दे ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना।

●

घर में काशी घर में मथुरा

- सांख्ययोगी कोकिलाबहन (सुरेन्द्रनगर)

भगवान श्री स्वामिनारायणने शिक्षापत्रि के १३९ में श्लोक में लिखा है कि हमारे आश्रित गृहस्थ माता-पिता, गुरु, रोगी की सेवा जीवन पर्यन्त करें।

भगवान स्वामिनारायणने प्रथम माता-पिता की सेवा करने की वात की है। किसी संत ने माता-पिता की सेवा में अडसठ तीर्थ का निरुपण किया है -

"घर मां काशी घर मां मथुरा, घरमां छे गोकडियो गाँव ।
माता पिताने दुभवशो तो नहि आवे तीर्थकाम ।
भाई मारे नथी जावुं तीर्थ धाम ॥"

इधर उधर भटकने से कोई फायदा नहीं । सारा शास्त्र सारी संस्कृति यहीं प्रमाणित करती है कि माता पिता की सेवा में सभी तीर्थ समाया हुआ है । घनश्याम महाराज भी अपने माता-पिता की सेवा करते थे । श्रवण अपने अन्धे माता-पिता की सेवा की थी । पुंडरीक ने भी अपने माता-पिता की सेवा की थी । एक बार पंढरपुर से एक संघ काशी गंगा स्नान के लिये गया वहाँ पर प्रत्यक्षरुप से गंगाजी प्रगट हुई और कहीं कि आपलोगों के स्नान को हम स्वीकार नहीं करेंगी क्योंकि पुंडरीक अपने माता-पिता की सेवा नहीं करता । संघ के लोगों ने उसे वहाँ से हटा दिया और वह वहाँ से वापस आकर माता-पिता की सेवा किया । भगवान उस पर प्रसन्न होकर उसके घर गये । दरवाजे से आवाज दिये कि पुंडरीक दरवाजा खोलो । पुंडरीक माता-पिता को स्नान करवा रहा था, सेवा में इतना अधिक मशगुल था दरवाजा खोलने नहीं गया । फिर भगवान जोर से चिल्ला कर कहे तो जाकर खोला और एक इँटा बैठने के लिये दे दिया, बाद में पुन: सेवा में लीन हो गया । भगवान जिस ईंट पर बैठे वह ईंट सोने की हो गयी । बाद में उस इँट को तथा भगवान को लेकर अपने घर में ले आया । इँट पर भगवान को खड़ा करके कहा कि जब तक मैं माता-पिता को स्नान कराऊँ तब तक आप इस इँट पर खड़े रहिये । माता-पिता की सेवा से निवृत्त होकर पुंडरीक भगवान के पास जाकर पूछा कि प्रभु आप मेरी झोपड़ी में कैसे पधारे ? तब भगवानने कहा मैं तुम्हारी माता-पिताकी सेवा से प्रसन्न होकर दर्शन देने आया हूँ । तब पुंडरीक ने कहा कि यदि हमारे ऊपर प्रसन्न हों तो आप प्रतिदिन हमें दर्शन दें । बाद में वहीं पर मंदिर बनवाया उसी में उसी सोने की ईंट पर भगवान विट्ठल की मूर्ति प्रतिष्ठित किया । वहीं मूर्ति आज भी विद्यमान है ।

उपरोक्त कथा से यह स्पष्ट होता है कि माता-पिता को कभी छोड़ना नहीं चाहिये । यह स्थिति कब आती है चिन्तनीय है, सम्भव है कि व्यक्ति जब किसी महिला से विवाह करलेता है और वह अपने सास श्वसुर से प्रतिकूल आचरण करने लगती है या ना समझी के कारण, आपसी कलह बन जाता है और पुत्र अपने माता पिता को छोड़ने पर विवश होता है - यद्यपि यह ना समझ के कारण ही होता है - किसी ने लिखा है कि ''भूलों भले बीजुं बधू, मा बापने भूलशो नहि, अगणित छे उपकार एना एने कदी विसर शो नहि ।'' इसलिये माता पिता की सेवा में ही सब कुछ समाया हुआ है । उन्हीं के आशीर्वाद से आपके जीवन में शुभ फल की प्राप्ति सम्भव है ।

•

संत समागम करके सच्चे भक्त बनें

- सांख्ययोगी गीताबा तथा आनंदीबा (विरमगाम)

भगवान को प्राप्त करने की क्या उपाय है ? इस विषय में भगवान स्वामिनारायण ने अपने श्रीमुख से कहा है कि सत्संग से भगवत प्राप्ति संभव है । भागवत में अष्टांग योग तथा सांख्ययोग पर विचार किया गया है । शास्त्र पठन या तप, यज्ञ, व्रतादिक से हम वश में नहीं होते ऐसे वाक्य भगवान श्री कृष्ण ने कहा है । सत्संग करने से तथा सन्तो के वताये मार्ग पर चलने से हम यशस्वी होते हैं ।

रामकृष्ण परमहंस ने अपने गुरु से पूछा कि आप ब्रह्मज्ञानी है, फिर भी प्रति दिन भजन-भक्ति ध्यान, सत्संग क्यों करते हैं तब अपने पानी पीने वाले लोटे को दिखाते हुये कहा कि इस लोटे को यदि प्रतिदिन नहीं माजें तो यह देखने लायक नहीं रहेगा । प्रतिदिन माजने से ही चमक रहा है । इसीतरह अपना मन है इसे प्रतिदिन सत्संग में नही लगायेंगे तो अन्यत्र विषयों में जाकर फंसेगा । इसलिये सतत किसी अच्छे संत का सत्संग करने से परमात्मा की तरफ गति होगी अन्यथा संसार में ही फंसे रहेंगे ।

खोरासा के एक भक्त राजाभाई थे । उनके घर एक बार संत पधारे । उनके आनन्द की सीमा न रही । लेकिन उनकी पत्नी को यह अच्छा नहीं लगता था । पत्नीने संतो के भोजन के लिये मना कर दिया । अब पति ने अपने मन में विचार किया कि यह मेरे लिये अच्छा हो गया । महाराज की इच्छा से ही हुआ है । उनके मन में संसार के प्रति घृणा हो गयी ।

हमे एकज वात, भजवा छे भगवान ।
सर्वस्व हरि काज लई पोतानो साज ॥

गुणातीतानंद स्वामीने भी लिखा है कि -

''करोड काम वगाडी एक मोक्ष सुधारी लेवो । इस तरह विचार कर श्रीजी महाराज को पाने के लिये तथा संतो का सत्संग करने के लिये घर से निकलजाने की उत्कट इच्छा हो गयी । अब वे अवसर देख ही रहे थे ।

एक दिन अपने उपरोहित से एक ऐसा पत्र लिखवाये कि राजाभाई के साले की तबीयत बहुत खराब है । वहीं पत्र घर पर भेंजवा दिये । पत्र पढते ही पत्नी अपने वच्चो को साथ लेकर मायके चल दी । इधर राजाभाई खेती-गृहस्थी सभी बेंच कर, सभी धन एकत्रित करके, अपने साथ लेकर साधु होने के लिये चल दिये । गढपुर आये । महाराज के चरण में अपने साथ लाया हुआ धन अर्पित करके अपना मस्तक

महाराज के चरण में रख दिये । महाराज ने कहा क्यों राजाभाई ? क्या है ? राजाभाई ने कहा मैं साधु होने के लिये आया हूँ।

महाराजने कहा ऐसा एकाएक क्यों ? राजाभाईने कहा कि कोई भी मेरे भगवान के या भगवान के संत के सामने आवे वह हमें अच्छा नहीं लगता । यहाँ हमारी पत्नीने ही संतो को भोजन के लिये मना कर दिया, इसलिये सब कुछ बेंचकर मैं आपकी शरण में आया हूँ।

लेकिन महाराज ने कहा कि यही संसार है - चलता रहेगा। ऐसे संसार नहीं छोड़ाजाता । साधु बनना अभी ठीक नहीं ? मैं आपके इस त्याग की प्रशंसा करता हूँ, इस कलिकाल में बड़ा कठिन है। फिर भी आप मेरी आज्ञा मानेंगे ? राजाभाईने कहा हाँ, तो आप अभी अगतराय के पर्वतभाई के घर जाइये और उनकी खेती वाडी सम्हालिये । अगतराय खोरासा से नजदीक भी है।

इस तरह पर्वतभाई की खेती करते हुये राजाभाई को १२ वर्ष बीत गये । उसी समय पर्वतभाई वडताल में उत्सव के अवसर पर महाराज का दर्शन करने आये । महाराजने राजाभाई का समाचार पूछा तो पर्वतभाईने राजा की कृतज्ञता व्यक्त करते हुये कहा कि वे आपको जय स्वामिनारायण कहे है । महाराजने कहा कि अब आपका बेटा बड़ा हो गया है सबकुछ सम्हाल सकता है, इसलिये उन्हें मेरे पास भेंज दीजिये । अब वे मेरी सेवा में रहेंगे ।

पर्वतभाई घर जाकर राजाभाई को गढडा भेंजते हैं । राजाभाई जब गढडा पहुंचते हैं तो महाराज उन्हें अपने गले लगालेते हैं । राजाभाई से कहते हैं कि मैं आपके ऊपर बहुत प्रसन्न हूँ आपको क्या चाहिये । राजाभाईने कहा महाराज ! आप अक्षरधाम में अपनी सेवा में रखिये । इसके बाद महाराज उन्हें दिव्य स्वरुप में विमान में बैठाकर अक्षरधाम में ले जाते हैं । इधर महाराज सभा में सभी से कहते हैं कि राजाभाई के तीन कार्य अविस्मरणीय हैं ।(१) संतो की सेवा में संसार विध्नरुप होते ही उसका त्याग कर दिये ।(२) संसार छोड़कर साधु होने के लिये आये और मेरी आज्ञा मानकर पर्वतभाई की सेवा किये, कभी मेरे दर्शन का लोभ नहीं रखे । (३) अक्षरधाम में जाने की उत्कट इच्छा जिससे मेरी सदा सेवा कर सके । महाराज राजाभाई का उदाहरण देकर सभी के लिये इसी तरह का आचरण करने के लिये सभी को प्रेरणा भी दिये ।

•

संत समागम

- परमार भूमिका भगवानजीभाई (हालार-सुरत)

एक गाँव में एक हरि भक्त रहते थे, उनकी उम्र करीब तिरपन-चौवन वर्ष की थी । एक बार उस गाँव में कुछ संत गये । संतो का सत्संगकिये । संतो ने उस वृद्ध से पूछा की आपके घर में कौन कौन है ? सब कुछ बताने के बाद बेटा-बहू के द्वारा त्रास की वात किये तो संतो ने कहा कि आप घर मत जाओ, इसी मंदिर में रहो । यह सुनते ही कहने लगे कि नहीं यहाँ से अच्छा मेरा घर है । हम यहाँ नहीं रह सकेंगे । यद्यपि वहाँ सभी उनका सन्मान करते थे दादा कहकर पुकारते थे । शिष्टव्यवहार होते हुयें भी घर की दुतकार सहने में उन्हें ममत्व था । यद्यपि मंदिर में भजन भक्ति करना था तो भी मंदिर में नही रुके । इसी को दुर्भाग्य कहेंगे ।

इस तरह का वृत्तान्त प्रायः सभी के घरों में देखने को मिलता है ।मंदिर में जब कभी बड़ा उत्सव होता है तब सत्संगी लोग एकत्रित होते हैं उस समय जनमेदिनी के बीच किसी हरिभक्त की देखभाल में कमी रह गयी तो सत्संग से विमुख होने तक की बात वह व्यक्ति सोच लेता है । कितनी दुर्भाग्य की वात कही जायेगी । यदि पूरे सत्संग को अपना परिवार मानले तो सायद यह भाव कभी नहीं आयेगा ।

इस विषय पर चिन्तन करें तो गढडा के प्रथम प्रकरण से स्पष्ट हो जायेगा - एक हरिभक्त महाराज से प्रश्न पूछा कि ''केटलाक तो घणा दिवस सुधी सत्संग करे छे तो पण तेने देह अने गेह या देहना सम्बन्धियों मां जेटलुं हेत थाय छे तेटलुं हेत सत्संग मां थतुं नथी तेनुं शुं कारण छे ?

तब श्रीजी महारजाने कहा कि ''तेने भगवाननुं माहात्म्य परिपूर्ण जाणवा मां आव्युं होतुं नथी अने जे संत ना योगे करीने भगवाननुं माहात्म्य परिपूर्ण जाणवामां आवे ते संत ज्यारे तेना स्वभाव ऊपर वात करे त्यारे वातना करनारा जे साधु तेनो अवगुण ले छे ए पापे करीने सत्संगमां गाढ प्रीति थती नथी अतः भगवान का सम्पूर्ण माहात्म्य जानकर ही भजन भक्ति करनी चाहिये । इसके लिये आवश्यक है संत समागम । सत्संग से आत्मापरिपुष्ट होती है।

श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्य बनने हेतु

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि अपना पता बदलने पर अंक न मिलने के विषय में अथवा अन्य कोई भी सिकायत हो तो श्री स्वामिनारायण मासिक के कार्यालय में प्रात १०-०० से ५-०० बजे तक संपर्क कर सकते हैं । प्रातः या रात्रि में फोन नहीं करें । पता बदलने के लिए महीने की २५ तारीख के पहले भेज देना आवश्यक है।

सत्संग समाचार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आदेश अनुसार पर्यावरण की सुरक्षा के हेतु वृक्षारोपण का आदेश दिया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क में सभी गाँव के हरिभक्तों को विशेश रुप से आज्ञा दी थी हमारे देश तथा गुजरात राज्य में जंगल कटते जा रहे है। जिस कारण प्रदूषण अधिक फैल रहा है। देश के एक उत्तम नागरिक तथा श्रीहरि के आश्रित के रुप में यह हमारी फरज है कि हम गाँव-शहरो में खेतो-बगीचें में बंगला-मंदिर-निवास स्थानों में तथा रास्तों में वृक्षा रोपण करे। वृक्षारोपण के बाद उसमें पानी दे कर जतन करें। इस प्रकार प्रत्येक हरिभक्तों को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने इस प्रकार आज्ञा दी। हम सभी उनकी आज्ञा मानकर उसका पालन करे। उसी में समाज का तथा हमारा श्रेय है। नरनारयणदेव युवक मंडलने निष्ठापूर्वक सेवा की।

- पी.पी. स्वामी कोटेश्वर गुरुकुल

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिरमें गुरु पूर्णिमा महोत्सव मनाया गया

अनंतकोटी ब्रह्माडं के अधिपति सर्वावतारी ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने अपनी उपस्थिति में महान तथा पवित्र दिव्य कुल धर्मकुल के अपने दो भाईयों के पुत्र को गोद लेकर पीठ स्थान स्थापित किये, उत्तर विभाग श्री नरनारायणदेव देश अहमदाबाद तथा दक्षिण विभाग श्री लक्ष्मीनारायणदेव देश वडताल इस प्रकार दोनों गद्दी पर संप्रदाय के आचार्य के रुप में प.पू.ध.धु. आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री अहमदाबाद तथा प.पू. रघुवीरजी महाराज वडताल समस्त आश्रितो के धर्मगुरु के रुप में अपने स्थान पर स्वयं ही विधिपूर्वक परंपरागत रुप से अभिषेक किया। आचार्य महाराजश्री स्वयं अनंत कोटी ब्रह्माडं के अधिपति के अपर स्वरुप हमें दर्शन तथा आशीर्वाद का सुख प्रदान कर रहेहैं।

आषाढ शुक्लपक्ष गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में भरत खंड के अधिपति श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प्रसादी के भव्य सभा मंडप में हजारो पूज्य संत तथा देशभर के हरिभक्तों ने प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का विधिपूर्वक परंपरागत शास्त्रोक्त रुप से पंडितो द्वारा स्वस्ति वाचन करके पूजन अर्चन किया गया। उसकेबाद अहमदाबाद मंदिर के महंत पू. शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी, पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, पूज्य ध्यानी स्वामी पू. देव स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) आदि संतोने पूजन अर्चन करके आरती उतारी थी। श्री नरनारायणदेव स्कीम कमिटी के सभी सभ्यो तथा अग्रगण्य हरिभक्तोने आरती पूजन करके भेट अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया तथा संतोने धर्मकुल आचार्य गुरु परंपरा की वेद परंरागत दृष्टांत के साथ ज्ञान प्रदान किया था। ७-३० से १२-०० बजे तक दर्शन आशीर्वाद के लिए हरिभक्तों की कतार लगी हुई थी। हजारो की संख्या में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-दर्शन का लाभ लेने के लिए गाँव गाँव से पधारे थे। सभा संचालन शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने किया था। समग्र प्रसंग की व्यवस्था में महंत स्वामी की प्रेरणा अनुसार कोठारी पार्षद दिगंबर भगत, जे.पी. स्वामी, ब्र. राजेश्वरानंदजी, बलदेव स्वामी (धोलेरा), जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, विश्वविहारी स्वामी आदि संतगण भी थे। अंत में हजारो हरिभक्तोंने प्रसाद ग्रहण करके विदाई ली।

- मुनि स्वामी

प.पू. लालजी महाराजश्री का १४ वाँ प्राकट्योत्सव मनाया गया

आषाढ कृष्णपक्ष-१० ता. २५-७-२०११ को सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के ८ वें वंशज तथा श्री नरनारायणदेव पीठ के भावि आचार्य प.पू. लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १४ वाँ प्राकट्योत्सव श्री नरनारायणदेव के चरण कमल में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सानिध्य में धूमधाम से मनाया गया।

सभा में पंडितो द्वारा विधिवत स्वस्ति वाचन किया गया। उसके बाद पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, पू.पी.पी. स्वामी जेतलपुर, पू. देव स्वामी (नारायणघाट) तथा पू. छोटे पी.पी. स्वामी आदि संतोने पूजन-आरती करके शुभेच्छा प्रदान की थी।

हमारे मंदिर की तरफ से प्रकाशित पंचरत्न शिक्षापत्री का विमोचन प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया। जिसकी सेवा हमारे संप्रदाय के मूर्धन्य लेखक तथा कथाकार पू. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर सेक्टर-२३) की तरफ से प्राप्त हुई थी। पू. स्वामी के शिष्य शा. हरिप्रियदासजीने प.पू. लालजी महाराजश्री को हार पहनाया था। इस अवसर पर मात्र विद्यार्थी संतो तथा बालकोने ही अपना वक्तव्य दिया था। सभा संचालन शा. नारायणमुनि स्वामीने किया था।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी भक्तों को श्री नरनारायणदेव में दृढ निष्ठा रखने के लिये द्रष्टांत रुप बनाकर दिव्य आशीर्वाद प्रदान किए थे।

संतो-महंतोने पुष्पहार पहनाकर शुभेच्छा प्रदान की। युवक मंडल तथा छोटे बड़े हरिभक्तों ने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन करके पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किए। इस

प्रसंग पर पू. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत के मार्गदर्शन से सुंदर सभा का स्टेज, सभा मंडप को सुभोभित किया गया था । हरिभक्तो के लिए प्रसाद का भी आयोजन किया गया था ।(अहमदाबाद तथा ग्राम्य विस्तार के श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने भी निष्ठापूर्वक अथक सेवा की ।

– जे.के. स्वामी

अहम्दाबाद मंदिर में भव्य झूलोत्सव दर्शन

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद कालुपुर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में झूलोत्सव का सुंदर आयोजन करके हरिभक्तों को दर्शन करवाया जाता है । जिस में फल, फूल, चोकलेट के अद्भूत कलात्मक डिजाईन बनाकर सायं ५-३० को झूलोत्सव दर्शन करवाया जाता है । इस निष्ठा तथा भावना पूर्ण सेवा मे महंत स्वामी की प्रेरणा से कोठारी पार्षद दिगम्बर भगत, बलदेव स्वामी, मुनि स्वामी, योगी स्वामी, छोटे स्वामी, भरतभाई भावसार नि:स्वार्थ सेवा की झूलोत्सव की सेवा में कई हरिभक्तो ने यजमान पद का लाभ लिया । – योगी स्वामी

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक तथा धार्मिक नगरी वडनगर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में स.गु महंत स्वामी हरिसेवादासजी की प्रेरणा से आषाढ शुक्ल पक्ष-१० के दिन पू.शा. विश्वप्रकाशदासजीने ''श्रीहरि वन विचरण'' का प्रसंग को समझने के लिये श्री घनश्याम महाराज के 'निलकंठ वर्णी' के सिंगार सजाकर हरिभक्तो को अलौकिक दर्शन का लाभ दिया था ।

गुरु पूर्णिमा के दिन धर्मगुरु धर्मधुरंधर प.पू. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का अलौकिक महिमा महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने वर्णन करके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के प्रतिमा का पूजन अर्चन करके समस्त हरिभ्कतो को आरती का अलौकिक लाभ प्रदान किया था ।

– महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, वनडगर

प.पू. लालजी महारजश्री का १४ वें प्रागट्योत्सव के प्रसंग पर कर्म शक्तिपार्क के बच्चो द्वारा वृक्षारोपण समारोह

संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के १४ वें प्राकट्योत्सव के प्रसंग पर श्री घनश्याम बाल मंडल (कर्म शक्ति पार्क) के १४ जितने बच्चो ने १४ वृक्षो के पौंधो को लगाकर उनके जतन की जिम्मेवारी ली थी । शाम ५-३० श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्म शक्ति में अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी तथा नारायणघाट के महंत छोटे पी.पी. स्वामी की उपस्थिति में तथा डॉ. सुरेशभाई पटेल चेरमेन (हेल्थ कमिटी) की उपस्थिति में प.पू. लालजी महाराजश्री का १४ वाँ प्रागट्योत्सव केक काटकर धूमधाम से मनाया गया । – युवक मंडल कर्म शक्ति

अपनी श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय का १००% परिणाम

श्री नरनारायणदेव के आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा संस्थापित श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय वर्तमान जेतलपुर अक्षर महोल वाडी में कार्यरत है । यहाँ अभ्यास करनेवाले संत-पार्षद तथा भूदेव प्रथमा-१ (कक्षा-८) से लेकर आचार्य (एम.ए.) तक की परीक्षा का १००% परिणाम आया है । पूज्य बड़े महाराजश्री के दृढ संकल्प तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से संचालित इस पाठशाला का परिणाम जानकर प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री अति प्रसन्न हुए थे । पाठशाला की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए उन्होंने दिव्य आशीर्वाद प्रदान किए ।

– महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, जेतलपुर

ईडर मंदिर का १६५ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स्वा. जगदीशप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ईडर मंदिर का १६५ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । ज्येष्ठ शुक्लपक्ष-९ प्रात: ७ बजे प.पू. महाराजश्री के हाथो से श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक विधिपूर्वक धूमधाम से मनाया गया । यजमान परिवार अमृतभाई हीराभाई तथा श्री जयंतीभाई हीराभाई (लालोडावाले) ने महापूजा में बैठने का अलौकिक लाभ लिया था ।

प.पू. महाराजश्री अन्नकूट की आरती उतारकर सभा में पधारे थे । सभा में महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी, संत मंडल रघुवीर स्वामी, स्वामी कृष्णप्रसाददासजी आदि संतोने प.पू. महाराजश्री का फूलहार से स्वागत करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । अ.नि. गंगाबहन हीराभाई के दोनो पुत्रो ने प.पू. महाराजश्री की आरती उतारकर भेट पूजन किया था ।

प्रासंगिक सभा में स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा शा.स्वा. हरिजीवनदासजीने प्रासंगिक उद्बोधन किया था । सभा संचालन वासुदेवचरणदासजीने किया था । अन्य सेवा में साधु सत्यसंकल्पदासजी, श्रीजी स्वामी, शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदास ने प्रदान की । हरिभक्तोंने दर्शन करके प्रसाद ग्रहण किया था ।

– शा. हरिजीवनदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या का ९७ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान बाल स्वरुप में जहाँ रहकर अद्भुत लीला करके संप्रदाय के आश्रितों के लिए महान तीर्थ भूमि बनाई ऐसी अयोध्या नगरी के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.

लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद-आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का ९७ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

प्रातः ७ बजे ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक विधिपूर्वक संपन्न किया गया। पाटोत्सव की यजमान श्रीमती प्रतिमाबहन नारणभाई पटेल तथा उनके बंधु प.भ. धीरुभाई पटेल (न्यायाधीश झारखंड रांची) आदि परिवारने महालाभ लिया था।

प्रासंगिक सभा में स.गु. स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स.गु. महंत ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी, स.गु. महंत स्वा. नारायणस्वरुपदासजी (प्रयाग), स.गु. स्वामी विश्ववल्लभदासजी (गढडा) तथा महंत देव स्वामीने इष्टदेव श्रीहरि तथा धर्मवंश के माहात्म्य को समझाया था। सभा संचालन पार्षद भरत भगतने किया था।

अन्य सेवा में विष्णु स्वामी, माधव स्वामी तथा भूपत भगत उपस्थित थे। मंदिर में नूतन धर्मशाला का भव्य निर्माण कार्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से हो रहा है। - पार्षद भरत भगत

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्रीके आशीर्वाद-आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री घनश्याम महाराज महिला मंडल द्वारा आषाढ शुक्लपक्ष-१० के दिन बहनो की समूह महापूजा का आयोजन किया गया था। जिस में ७० जितनी बहनोने लाभ लिया था। देवशयनी एकादशी के चातुर्मास के नियमों का बहनोने पालन किया था। महंत स्वामीने कार्यक्रम का उत्तम आयोजन किया था। - लाभु बहन

श्री स्वामिनारायण मंदिर बामरोली (एम.पी.) पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री राधाकृष्ण का पाटोत्सव ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१२ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से षोडशोपचार अभिषेक अन्नकूट आरती आदि संपन्न हुआ। पाटोत्सव के यजमान पाटडी की सांख्ययोगी शांताबाई, हंसाबाई, तथा सां. रंजनबाईने लाभ लिया था। - नारायणजी तलाटी कोठारी पाटडी

प्रेरणात्मक प्रवृति श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (बापुनगर) द्वारा मरीजों को फलों का वितरण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से ता. १७-७-२०११ को बापुनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा सरसपुर शारदाबहन म्यु. होस्पिटल, नरोड़ा चामुंडा ब्रीज के पास एक नई बनी केन्सर होस्पिटल में प्रत्येक मरीजों को तथा बच्चो को फलों का वितरण संतो के हाथों से किया गया।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा प्रत्येक महीने के तीसरे रविवार को मरीजो की सेवा का यह कार्यक्रम चालु रखने का निर्णय लिया गया है। धन्य है युवक मंडल उनकी इस भावना से प्रेरणा लेनी चाहिये। - गोरधनभाई सीतापरा

अरोडा मंदिर का पाँचवा पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर मंदिर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से पुराने अरोडा मंदिर का पाँचवा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। समूह 'महापूजा' में हरिभक्तोंने लाभ लिया था। ठाकुरजी की अन्नकूट आरती के बाद शा.स्वा. हरिजीवनदासजी तथा वासुदेवचरण स्वामीने कथावार्ता का लाभ दिया था।

शा. श्रीजीप्रकाशदासजी तथा कोठारी सत्यसंकल्पदासजीने पाटोत्सव प्रसंग पर अच्छी सेवा की। पाटोत्सव के यजमान प.भ. नवनीतभाई अंबालाल पटेल को महंत स्वामीने आशीर्वाद रुपी हार पहनाकर उनकी सेवा की प्रशंसा की। - कोठारीश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा अखंड महामंत्र धून का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी की प्रेरणा से महिला मंडल की सत्संगी बहनो द्वारा ता. ७-७-२०११ से ९-७-२०११ तक कुल ४८ घंटे श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून श्रीहरि के प्रसन्नार्थ तथा मेघराजा को मनाने हेतु की गई। परिणाम स्वरुप वर्षाभी हुई। धून के आयोजन प.भ. केशा काका तथा रमणभाई शर्माने किया था। धून के नास्तें की सेवा चतुरभाई गज्जर तथा जसीबहन की तरफ से की गई। पूर्णाहुति की आरती चंद्रप्रकाश स्वामीने उतारी थी। - स्मित भाविन

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बापुनगर द्वारा लवारपुरा गाँव में सत्संग सभा का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बापुनगर द्वारा गांधीनगर जिल्ले के लवारपुर गाँव में ता. ३-७-२०११ को रात्री में सत्संग सभा का आयोजन किया गया। जिसमें नारणघाट मंदिर से पधारे शा.स्वा. अभयप्रकासदासजी तथा शा. दिव्यप्रकाशदासजीने कथावार्ता तथा कीर्तन भक्ति का रसपान करवाया था। लवारपुर गाँव में युवक मंडल द्वारा ऐसे सत्संग प्रचार का कार्य निरंतर होता रहे ऐसी श्रीजी महाराज से प्रार्थना है।- श्री न.ना.देव युवक मंडल, लवारपुर

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर ७ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मूली श्री राधाकृष्णदेव के श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर में ता. ११-५-२०११ से ता. १५-५-२०११ तक ७ वाँ पाटोत्सव के उपलक्ष में अनेक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

ता. ११-५-२०११ से ता. १५-५-२०११ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचदिनात्कम पारायण स.गु. शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी (जेतलपुर अक्षर महोलवाडी संचालकश्री) तथा स.गु. शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (महंतश्री नारणपुरा) के वक्तापद पर हजारो भाविक भक्तोंने लाभ लिया था। बहनों के आग्रह पूर्ण आमंत्रण को मान देकर बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्रीने पधारकर बहनों को आशीर्वाद दर्शन का सुख दिया था। पारायण प्रसंग पर ११ सहिंतापाठ तथा समूह महापूजा का आयोजन किया गया था। कथा के मुख्य यजमान प.भ. बाबुभाई छोटाभाई पित्रोडा परिवार तथा पाटोत्सव के मुख्य यजमान पद पर प.भ. ठाकरसीभाई मोहनभाई अडालजा परिवार, धर्मकुल के पूजन के यजमान प.भ. धनजीभाई देरमा परिवार तथा दैनिक रसोई का भिन्न भिन्न हरिभक्तों ने यजमान पद का लाभ लिया था । इस प्रसंग पर मंदिर के संत शा.स्वा. कृष्णप्रकासदासजीने उत्सव की तैयारी के लिए प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से केवल एक महिने के लिए अमेरिका से आये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री गद्दी पर पधारे उसके बाद यहाँ प्रथम बार पधारे थे। इस कारण झालावाड के हरिभक्तों ने उनका धूमधाम से स्वागत किया। कड़कती धूम में गरमी में भी हर्षित मुखारविंद का सभी को दर्शन लाभ शोभायात्रा में मिला था। मंदिर में अन्नकूट की आरती उतारकर सभा में पधारे थे। जहाँ यजमानो ने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती की। समस्त सभा को प.पू. महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद दिये। इस प्रसंग में अन्नकूट-महाप्रसाद आदि सेवा में कोठारी कालु भगत, मुक्त स्वरुप स्वामी, युवक मंडल तथा महिला मंडलने सहयोग दिया था। मूली के वयोवृद्ध पू. नरनारायण स्वामी की प्रेरणा से के.पी. स्वामी प्रेमस्वरुप स्वामी, नरोत्तम भगत तथा गोपाल स्वामी आदि संतोने उत्तम सेवा की। - कोठारी बाबुभाई अडालजा

सुरेन्द्रनगर मंदिर में रात्रि कथा पारायण का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा यहाँ के मंदिर के महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी की शुभ प्रेरणा से सुरेन्द्रनगर के मंदिर में ता. ८-६-२०११ से ता. १५-६-२०११ तक श्रीमद् भक्तचिंतामणी की रात्री कथा शा.स्वा. सत्यसंकल्पदासजी तथा शा.स्वा. सुव्रतस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई। जिसके यजमान प.भ. मनसुखभाई झवेरभाई तथा पटेल घनश्यामभाई शंकरभाई थे। कथावार्ता में कई हरिभक्तोंने लाभ लिया था। कथा दरम्यान अल्पाहार प्रसाद दिया गया। समग्र आयोजन शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने किया था। - शैलेन्द्रसिंह झाला

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में चातुर्मास में आषाढ शुक्लपक्ष-११ से सावन महीने तक श्रीमद् सत्संगिभूषण शास्त्र की कथा साधु वंदनप्रकाशदासजीने की। की हरिभक्तोंने कथा का लाभ लिया। महंत स्वामी भक्तवत्सलदास मार्गर्शन रुप थे। - जयेशभाई सोनी

विदेश सत्संग समाचार

प.पू. बड़े महाराजश्री की लेस्टर (यु.के.) में पधरामणी

श्रीहरि के छठ्ठे वंशज प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री प.भ. मूलजीभाई काचा परिवार के लग्न प्रसंग पर अत्यंत आग्रहपूर्वक आमंत्रण के कारणवश आशीर्वाद देने ता. १५-७-२०११ को लेस्टर पधारे थे। प.पू. बडे महाराजश्री लेस्टर पधारे यह समाचार जानकर कच्छ-हालार तथा गुजरात के हरिभक्तगण दर्शन करने पहुंच गये थे। प.भ. मूलजीभाई की पुत्री के विवाह में स्वयं महाराजश्रीने पधारकर जिस प्रकार दादाखाचर की बारात में स्वयं श्रीजी महाराज पधारे थे इस दृष्टांत को परिपूर्ण किया था। उसके बाद अपने लेस्टर के मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे। वहाँ ठाकुरजी का अभिषेक करके आरती उतारकर प.पू. बड़े महाराजश्री सभा में पधारे थे। सभा में हरिभक्तों ने गुरु पूर्णिमा के निमित्त गुरु पूजन करके समूह आरती की। हरिभक्तोंने गुरुपूजन के निमित में जो भेट प्रदान की उनसे श्री स्वामिनारायण म्युझियम में श्री नरनारायणदेव के अभि,क पूजन लेस्टर के समस्त हरिभक्तों की तरफ से किये जाएगे। तथा गुजरात में स्थायि उनके संबंधी उसका लाभ प्राप्त करेंगे ऐसा कहकर आशीर्वाद दिये। - हजुरी पार्षद कनु भगत

श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडन लंडन मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री वरद् हाथों से पाटोत्सव मनाया गया

आषाढ शुक्ल पक्ष-१५ गुरु पूर्णिमा के शुभ दिन पर प.पू. बड़े महाराजश्री विल्सडन लेन मंदिर में कच्छ के हरिभक्तो के भावपूर्ण आमंत्रण से पाटोत्सव में पधारे थे। सुबह बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों से विधिपूर्वक सम्पन्न किया गया। भुज (कच्छ) के संतगण भी पधारे थे।

उसके बाद शाम को विशेष रुप से गुरु पूर्णिमा प्रसंग की सभा में संतो तथा हरिभक्तों ने साष्टांग दंडवत करके आरती करके प.पू.

बड़े महाराजश्री का गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पूजन अर्चन किया था।

भुज के संतोने गुरु पूर्णिमा को समस्त सत्संग के गुरु धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री है आज उनका ही सर्व प्रथम पूजन करना चाहिए ऐसा प्रेरणादायक प्रवचन किया। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा कि कई वर्षो बाद हमें अपने इस मंदरि में घनश्याम महाराज के अभिषेक का लाभ मिला। स्वीडन मंदिर निर्माण से लेकर मूर्ति प्रतिष्ठा तक, न्युजर्सी के मंदिर निर्माण, श्री स्वामिनारायण म्युझियम के निर्माण में हनुमानजी महाराज जैसे हमारा साथ देते है वैसे ही विल्सडन मंदिर ने भी हमें बहुत सहयोग दिया है। आप सभी को हम कभी नहीं भूलेंगे। विल्सडन मंदिर के हरिभक्तों ने हर उत्सव में साथ दिया है। इतना कह कर आशीर्वाद प्रदान किए। - पार्षद कनु भगत

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.)

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर ता. २५-६-२०११ शनिवार को जनमंगल का पाठ किया गया था। प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से पधारे हुए साधु विजयप्रकाशदासजी स्वदेश वापस जा रहे थे इस कारण उनका सन्मान किया गया। स्वामी घनश्यामदासजीने १०८ जनमंगल नामावलि को विस्तार से समजाकर पूजन करवाया। यजमान पद का प.भ. तरुणभाई फरसुरामभाई त्रिवेदी परिवारने लाभ लिया था। उसके बाद श्री भक्ति महिला मंडल द्वारा भोजन प्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गई थी।

- किरणभाई भावसार, सहमंत्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिनेमिन्सन (अमेरिका)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम सिनेमिन्शन में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से यहा के बच्चों, युवानो तथा समस्त सत्संग द्वारा गुरु पूर्णिमा का महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। सभा में जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा विहोकन मंदिर के महंत शा.स्वा. माधवप्रियदासजी ने प.पू. आचार्य महाराजश्री की तसवीर का पूजन अर्चन आरती करके धर्मकुल का माहात्म्य कहा था। महंत शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजीने भी गुरुपूर्णिमा का माहात्म्य कहा था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृति अच्छी चल रही है।

- नविनभाई पटेल

कोलोनिया (अमेरिका) मंदिर प.पू. गादीवालाश्री की पधरामणी

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में रविवार विकेन्ड में शाम को हमारी बहनों की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री सांख्ययोगी बहनो के साथ पधारी थी। सभा में महामंत्र धून तथा बहनोने कीर्तन भक्ति तथा कथावार्ता का लाभ देकर समजाया था कि बहनो की गुरु प.पू. गादीवालाश्री के द्वारा प्रथम गुरु मंत्र लेकर कंठी धारण करनी चाहिये। तथा पंचव्रत का पालन करके यथार्थ स्वरुप से सत्संगी बनना चाहिये। इस प्रकार सांख्ययोगी बाईने बहनो को उपदेश दिया। अंत में प.पू. गादीवालाश्रीने बहनो को आशीर्वाद देते हुए भगवान का भजन - स्मरण तथा मंदिर में नित्य दर्शन करने का उपदेश दिया। प.पू. गादीवालाश्रीने मंदिर में ठाकुरजी की आरती की। - उषाबहन शाह

कोलोनीया मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री का पदार्पण

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में २६ जून रविवार शाम को सत्संग सभा में हमारे भावि आचार्य पधारे थे तथा बहनों की सभा में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, पू. श्रीराजा, पू. बिन्दुराजा पधारी थी। श्री सुव्रतकुमार, श्री सौम्यकुमार, पार्षद कनु भगत पधारे थे। धून कीर्तन का कार्यक्रम किया गया। उसके बाद कलिवलेन्ड से पधारे हुए शा. व्रजवल्लभ स्वामी तथा स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर)ने सत्संग की सर्वोपरिता, महिमा, माहात्म्य, नियम, निश्चय तथा पक्ष आदि प्रसंगो का वर्णन करके कथा की थी। अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा कि सत्संग में भगवान का भजन करने का उत्तम अवसर मिला है। उसे खोना नहीं चाहिए। यजमान बहनोने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, पू. बिन्दुराजा तथा पू. श्रीराजा का पूजन अर्चन करके पुष्पहार पहनाये थे। यजमान परिवार प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

- प्रविण शाह

विहोकन मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया

न्युजर्सी श्री स्वामिनारायण मंदिर में १ जुलाई को भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री, साथ में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा पधारी थी। पू. बिन्दुराजा तथा उनके साथ श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार भी पधारे थे। प्रथम प.पू. लालजी महाराजश्री ने ठाकुरजी की आरती उतारकर हरिभक्तों को दर्शन का लाभ दिया था।

प्रासंगिक सभा में प्रेसिडेन्ट प.भ. भक्तिभाईने समस्त सत्संगिओं की तरफ से प.पू. लालजी महाराजश्री का हार पहनाकर स्वागत किया था। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का पूजन लीलाबहन चोक्सी (न्युयोर्क) ने किया था।

पू. बिन्दुराजा तथा पू. श्रीराजा का स्वागत पूजन बहनोने किया था। पू. श्रीराजाके जन्मदिन पर बालिकाओंने उत्साह पूर्वक पू. श्रीराजा से केक कटवाकर जन्मोत्सव मनाया। शा. व्रजवल्लभ स्वामीने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया। अंत में समस्त सभा को

आशीर्वचन देते हुए कहा भगवानने हमें इस संसार में इतने सुंदर सत्संग में जन्म दिया है। भगवान का भजन कर इस जीवन का कल्याण हो ऐसे कार्य करते रहना चाहिये।

अंत में प.भ. प्रहलादभाई पटेलने प.पू. लालजी महाराजश्री का तथा लीलाबहनने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा को भेट देकर पूजन किया। – प्रविणभाई

चेरीहिल मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री का पदार्पण

२५ जून रविवार को चेरिहील मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, पू. बिन्दुराजा, पू. श्री राजा, श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार तथा संत हरिभक्तों की उपस्थिति में भाईयों तथा बहनों की सभा की गई। प.पू. लालजी महाराजश्री ठाकुरजी की आरती करके सभा में पधारे थे। यजमान तथा आगेवान हरिभक्तोने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन-आरती की। बहनो की सभा में बहनोने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, पू. बिन्दुराजा, पू. श्रीराजा का स्वागत पूजन किया।

सभा में शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने कहा आज का दिन धन्य है। धर्मकुल की कृपा से ऐसा सुंदर मंदिर तथा सत्संग मिला है। अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा कि मंदिर के मार्ग में आने वाली हर माया को दूर रखना चाहिये। उसे ही दर्शन की सार्थकता कहते है। केम्प में प्रत्येक बालको को लाभ लेने का अनुरोधकिया। क्योंकि केम्प द्वारा आत्मीयता की प्रगति होगी ऐसे सुंदर आशीर्वाद दिये।प्रविणभाई।

श्री स्वामिनारायण अंक न प्राप्त करने की फरियाद के विषय में

अपना श्री स्वामिनारायण मासिक हर महीने की ११ तारीख को नियमित रुप से पोस्ट किया जाता है। इसके बावजूद यदि किसी सदस्य को अंक नही मिलता है तो २० तारीख को अपनी स्थानिक पोस्ट में जाँच करने के बाद सदस्य नंबर के साथ जानकारी दें। सदस्य नंबर के अलावां फरियाद मंजूर नहीं की जायेगी। स्टोक में अंक होगा तो फिर से भेज दिया जायेगा।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

देलवाडा (ता. विजापुर) : वर्तमान अहमदाबाद प.भ. मणीभाई खांडवाला (श्रीस्वा.मासिक के प्रतिनिधि) तथा श्री ईश्वरभाई तथा श्री तुलसीभाई के पू. पिताश्री प.भ. जीवराजभाई मोहनदास पटेल (उम्र १०७) श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए ता. १०-६-२०११ कलोल में अक्षरनिवासी हुए।

जेपुर (ता. विजापुर) : प.भ. जमनाबहन काशीराम पटेल ता. २४-६-२०११ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुइ।

अरोडा (ईडर) : प.भ. कनुभाई तथा प.भ. जीतेन्द्रकुमार पटेल (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभ्य) की माताजी प.भ. रुखीबहन मोतीभाई पटेल ता. १२-६-२०११ को निर्जला एकादशी के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुइ।

गांधीनगर : प.भ. योगेशभाई कांतिलाल ठक्कर की माताजी प.भ. कुंदनबहन कांतिलाल ठक्कर ता. २०-६-२०११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुइ।

अहमदाबाद : प.भ. धीरुभाई भीखाभाई ब्रह्मभट्ट (श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के निष्ठावान हरिभक्त तथा सरसपुर नागरिक को.ओ. बेंक के निवृत चेरमेन) की धर्मपत्नी प.भ. हंसाबहेन धीरुभाई ब्रह्मभट्ट ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१० ता. २६-६-२०११ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुइ।

अहमदाबाद : प.भ. मोहनलाल नानजीभाई पटेल ता. २२-६-२०११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अंबापुर (जी. गांधीनगर) : प.भ. नाथालाल बकोरभाई ता. २५-७-२०११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

जोधावास (वाली राजस्थान) : प.भ. चौधरी नरसीराम उकाजी की माताजी हसतुबहन उकाजी चैत्र शुक्ल बक्ष-१५ ता. १८-४-२०११ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुइ।

बालवा : अहमदाबाद मंदिर के माजी कमिटी के सभ्य तथा श्री नरनारायणदेवि तथा प.पू. महाराजश्री के कृपापात्र प.भ. अमृतभाई लवजीभाई चौधरी १० ता. २६-७-२०११ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

लेस्टर (यु.के.) : अपने लेस्टर मंदिर के पूर्व पूजारी तथा श्री नरनारायणदेव तथा प.पू. महाराजश्री के कृपापात्र प.भ. आनंदभाई गोकलदास ता. २६-७-२०११ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(૧)સિડની મંદિરમાં દર્શન આપતા ઠાકોરજી (૨) કોઠંબા(પંચમહાલ)મંદિરમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે અન્નકૂટ દર્શન (૩) અયોધ્યા મંદિરમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે પૂજન કરતા યજમાન પ્રતિમાબેન પટેલ અને તેમના ભાઈ પ.ભ. ધીરૂભાઈ પટેલ (ન્યાયાધિશ) (૪) કાંકરિયા મંદિરમાં ચંદનના વાઘામાં ઠાકોરજીના દર્શન (૫) કર્મશક્તિ મંદિરમાં પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીના જન્મોત્સવ પ્રસંગે વૃક્ષારોપણ કરતા પૂ. મહંત સ્વામી (૬) મોવાસા (પંચમહાલ) મંદિરની ખાત વિધિ કરતા જેતલપુરનું સંત મંડળ અને સાથે નવા હરિભક્તો (૭) કોઠંબામાં કથા કરતા શા.ભક્તિનંદન દાસ (જેતલપુર) (૮) એપ્રોચ (બાપુનગર) ના હરિભક્તો હોસ્પિટલમાં દર્દીઓને ફ્રુટ વિતરણ કરતા (૯) છપૈયા ધામમાં જન્મસ્થાનનું ચાલતું નિર્માણ કાર્ય.

Registered under RNI-GUJGUJ/2007/20221"Permitted to post at
Ahd PSO on 11th every month under postal REG. NO. GAMC.-003/9-11 issued SSP Ahd Valid
up to 31-12-2011 Licenced to Post without pre payment No. CPMG/GJ/01/07-08 valid up to 31/12/2011

(૧) હ્યુસ્ટન મંદિરમાં નિલકંઠવર્ણી સ્વરૂપે દર્શન (૨) સિનેમિન્સન મંદિરમાં ગુરૂપૂર્ણિમા પ્રસંગે સભા (૩) ફ્લોરિડા મંદિરમાં પૂ. શ્રી રાજાના જન્મદિન પ્રસંગે સભામાં કેક કાપીને પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીને કેકનો પ્રસાદ ખવરાવતા પૂ. શ્રી રાજા (૪) વિલ્સડન લંડન મંદિરમાં બાળ સ્વરૂપ ઘનશ્યામ મહારાજનો પાટોત્સવ અભિષેક કરતા પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી (૫) લંડનમાં કિંગ્સ કિચનવાળા શ્રી મનુભાઈને ત્યાં પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીની પધરામણી (૬) લેસ્ટરમાં કાચા ટેલર્સ પરિવારને ત્યાં લગ્ન પ્રસંગે આશીર્વાદ આપવા પધારેલા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી

Prafull Kharsani